SiddhShree

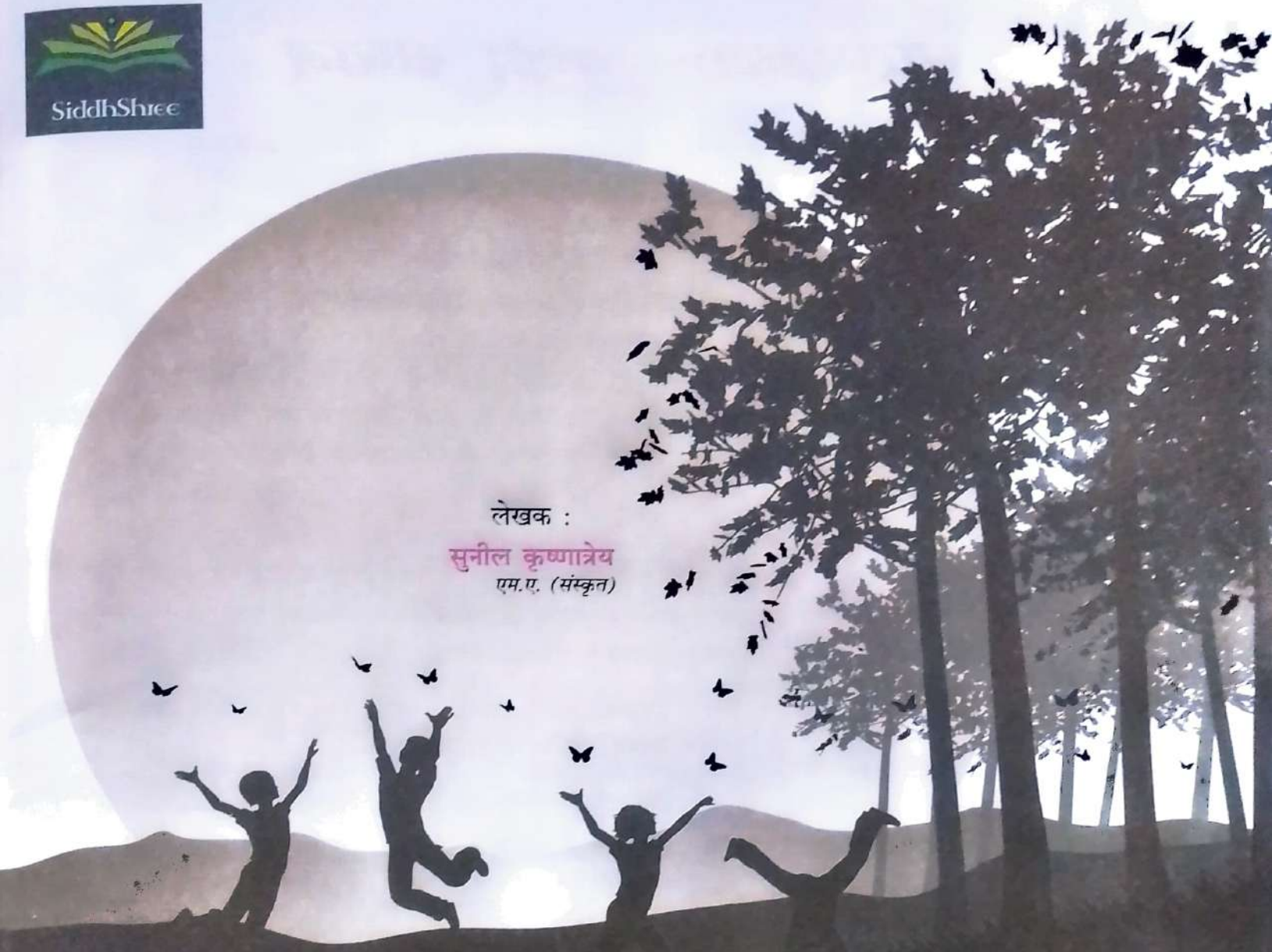

लेखक :
सुनील कृष्णात्रेय
एम.ए. (संस्कृत)

7

सरल संस्कृत व्याकरण

पाठ्यक्रमः- कक्षा सप्तम्

अनुक्रमणिका

1. भाषा एवं व्याकरण (Language and Grammar) ... 5
2. वर्ण परिचय (Alphabet) ... 10
3. सन्धि (Joining) ... 14
4. लिङ्ग (Gender) ... 18
5. शब्द रूप (Declension) ... 20
6. धातु–रूप (Conjunction) ... 33
7. कारक तथा उपपद विभक्ति (Case and Case Signs) ... 55
8. अव्यय (Indeclinable) ... 58
9. समास (Compounds) ... 61
10. कृत् प्रत्यय (Primary Suffixes) ... 65
11. अनुवाद (Translation) ... 70
12. पत्र लेखन (Letter Writing) ... 77
13. निबन्ध–लेखन (Essay Writing) ... 79

1

भाषा एवं व्याकरण
Language and Grammar

मनुष्य अपने विचारों का आदान प्रदान बोलकर या लिखकर करता है। इसे भाषा (Language) कहते हैं।

अत: भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करता है।

भाषा को दो प्रकार से प्रकट किया जा सकता है।

1. बोलकर— इसे भाषा का 'भाषित' रूप कहते हैं। इसी का प्रयोग सर्वाधिक होता है।
2. लिखकर— इसे भाषा का 'लिखित' रूप कहते हैं। दूरस्थ व्यक्ति के समक्ष भाषा के लिखित रूप के द्वारा ही विचार प्रकट किए जाते हैं।

वाक्य (Sentence)

जिस प्रकार एक-एक ईंट के द्वारा किसी भवन का निर्माण होता है, उसी प्रकार भाषा वाक्यों के द्वारा बनती है। भाषा की सार्थक ईकाई का नाम 'वाक्य' है।

शब्द (Word)

सार्थक शब्दों के व्यवस्थित रूप को वाक्य कहते हैं। शब्द अनेक ध्वनियों का समूह होता है।

यथा— 1. राम 2. जाना 3. पाठ 4. देखना आदि।

ध्वनियों का समूह, जो अर्थवान होता है, शब्द कहलाता है।

वर्ण (Letter)

प्रत्येक शब्द ध्वनियों से मिलकर बनता है। यथा 'राम' एक शब्द है इसमें निम्नलिखित चार ध्वनियाँ हैं— र्, आ, म्, अ। इन ध्वनियों के खंड नहीं किए जा सकते हैं। अत: छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके खंड न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है।

संस्कृत में वर्ण को अक्षर भी कहा जाता है।

वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े न किए जा सके 'वर्ण' कहलाते हैं।-

संस्कृत में कुल 50 ध्वनियाँ हैं।

व्याकरण (Grammar)

हमें भाषा के शुद्ध स्वरूप का ज्ञान व्याकरण शास्त्र के द्वारा होता है। इस शास्त्र के माध्यम से व्यक्ति की भाषा को समझने में सुगमता होती है।

व्याकरण वह साधन है जिसके द्वारा भाषा के शुद्ध स्वरूप का ज्ञान सुगमता से होता है।

लिपि (Script)

भाषा के अक्षरों को लिपि कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है। संस्कृत की लिपि का नाम देवनागरी है। हिन्दी भाषा ने भी इसे अपनाया हुआ है। यथा

शब्द	भाषा	लिपि
[illegible]	हिन्दी	देवनागरी
[illegible]	संस्कृत	देवनागरी
ह्यूमन	अंग्रेज़ी	रोमन

ध्वनियों को लिखित रूप में जिसके द्वारा किसी भाषा को प्रकट किया जा सकता है, लिपि (Script) कहलाता है।

लिंग (Gender)

संस्कृत भाषा में समस्त शब्द समूह को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है। यह विभाजन लिंग के आधार पर है। यथा—

(i) पुंल्लिङ्ग (Masculine Gender) – जिस शब्द के द्वारा पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुंल्लिंग कहते हैं।

बालकः लड़का

शुकः तोता

(ii) स्त्रीलिङ्ग (Feminine Gender) – जिस शब्द के द्वारा स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहा जाता है।

बाला लड़की

लता बेल

(iii) नपुंसकलिङ्ग (Neuter Gender) – जिस शब्द के द्वारा न पुरुष जाति का तथा न ही स्त्री जाति का बोध हो, उसे नपुंसक लिंग कहा जाता है।

कुसुमम् फूल

फलम् फल

जिसके द्वारा किसी शब्द में पुरुषत्व, स्त्रीत्व आदि जाति का बोध होता है वह लिंग कहलाता है।

वचन (Number)

जिसके द्वारा संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं। संस्कृत में तीन वचन होते हैं।

1. एकवचन (Singular)— जिसके द्वारा एक संख्या का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं। यथा—

शुकः = तोता

मयूरः = एक मोर

2. द्विवचन (Dual)— जिसके द्वारा दो संख्याओं का बोध होता है, उसे द्विवचन कहते हैं। यथा—

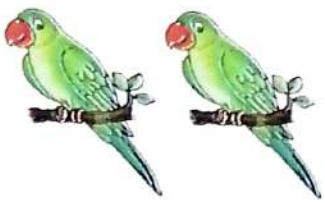

शुकौ = दो तोते

मयूरौ = दो मोर

3. बहुवचन (Plural)— जिसके द्वारा दो से अधिक संख्याओं का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। यथा—

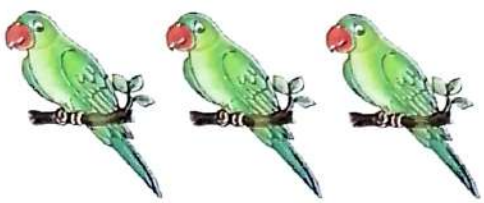

शुकाः = कई तोते

मयूराः = कई मोर

वचन के द्वारा संख्या का ज्ञान होता है। संस्कृत में तीन वचन होते हैं।

पुरुष (Person)

संस्कृत भाषा में तीन पुरुष होते हैं।

1. उत्तम पुरुष (First Person)— वक्ता को उत्तम पुरुष कहते हैं। यथा—

अहम्	मैं	I
आवाम्	हम दो	We (two)
वयम्	हम सब	We

2. मध्यम पुरुष (Second Person)— जिससे वक्ता बात करे, वह मध्यम पुरुष कहलाता है। यथा—

त्वम्	तुम	You
युवाम्	तुम दो	You (two)
युयम्	तुम सब	You (all)

3. अन्य पुरुष (Third Person) — जो न वक्ता है तथा न ही वक्ता के समक्ष उपस्थित है, वह अन्य पुरुष कहलाता है। यथा

सः	वह	He
तौ	वे दोनों	They (two)
ते	वे सब	They (all)

संस्कृत में इसे प्रथम पुरुष भी कहते हैं। यथा—

सः (वह) तौ (वे दोनों) ते (वे सब)

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित की परिभाषा लिखिए।

व्याकरण

शब्द

भाषा

अक्षर

2. उदाहरण देकर समझाइए।

पुरुष

वचन

3. सही कथन पर (✓) चिह्न से अंकित कीजिए।

(क) संस्कृत में सात पुरुष होते हैं।

(ख) शब्द को अक्षर भी कहा जाता है।

(ग) संस्कृत में दो वचन होते हैं।

(घ) संस्कृत में तीन लिंग होते हैं।

(ङ) अन्य पुरुष को प्रथम पुरुष भी कहते हैं।

4. लिंग के आधार पर निम्नलिखित शब्दो को वर्णो मे बाँटिए और नीचे खाली स्थान मे लिखिए-

पुष्पम्

बाला

कमलम्

फलम्

शिशुः

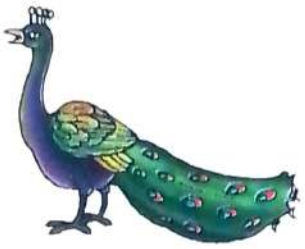

मयूरः

शुकः

लता

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसक लिंग

2 वर्ण परिचय
Alphabet

पिछले अध्याय में बताया जा चुका है कि संस्कृत में 50 वर्ण हैं। इन्हें तीन प्रमुख वर्गों में विभक्त किया जाता है

1. स्वर 2. व्यंजन 3. अयोगवाह

वर्णों के तीन वर्ग हैं— स्वर, व्यंजन, अयोगवाह।

स्वर (Vowel)

जिस वर्ण के उच्चारण में किसी अन्य ध्वनि की सहायता न ली जाए, उसे स्वर कहते हैं। ये सोलह हैं।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ	= 6
ऋ, ॠ, ऌ	= 3
ए, ऐ, ओ, औ	= 4

जिस ध्वनि का उच्चारण स्वत: हो सके, उसे स्वर कहते हैं। ये 13 हैं।

ऌ अक्षर संस्कृत में लुप्तप्राय: है।

स्वरों का वर्गीकरण (Classification Of Vowels)

उच्चारण काल की दृष्टि से स्वरों के तीन भेद हैं।

1. ह्रस्व स्वर (Short Vowel) — जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का काल अर्थात् सबसे कम समय लगे, उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं।

   स्वर में 5 ह्रस्व स्वर हैं—

   अ, इ, उ, ऋ, ऌ।

2. दीर्घ स्वर (Long Vowel) — जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्रा का काल लगे, उसे दीर्घ स्वर कहा जाता है।

   संस्कृत में आठ दीर्घ स्वर हैं। यथा—

   आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

3. प्लुत स्वर (Protracted Vowel)— जिस स्वर के उच्चारण में तीन मात्रा का काल लगे, उसे प्लुत स्वर कहा जाता है। संस्कृत में प्लुतत्व को प्रकट करने के लिए अक्षर के बाद (३) चिह्न लगाया जाता है। यथा— ओ३म्।

संस्कृत में दूर से बुलाने में स्वर को प्लुत कर दिया जाता है।

भो देव ३! अत्र आगच्छत।

स्वर तीन प्रकार के हैं— ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत

व्यंजन (Consonant)

जिस वर्ण के उच्चारण में स्वर की सहायता ली जाए, उसे व्यंजन कहते हैं।

संस्कृत में कुल 33 व्यंजन वर्ण हैं।

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले अक्षर को व्यंजन कहते हैं।

व्यंजनों के भेद

व्यंजनों को तीन वर्गों में विभक्त किया जाता है।

1. स्पर्श 2. अन्त:स्थ 3. ऊष्म

1. स्पर्श (Mute)— स्पर्श वर्ण का उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के किसी-न-किसी भाग का स्पर्श अवश्य करती है। इनकी संख्या 25 है तथा इन्हें पाँच-पाँच के समूहों में रखा जाता है। जैसे प्रत्येक समूह को वर्ग कहते हैं। यथा—

क वर्ग	—	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
च वर्ग	—	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
ट वर्ग	—	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
त वर्ग	—	त्, थ्, द्, ध्, न्
प वर्ग	—	प्, फ्, ब्, भ्, म्

2. अंत:स्थ (Semi Vowel)— ये स्वर तथा व्यंजनों के मध्यवर्ती वर्ण हैं। इनकी संख्या चार है।

संस्कृत व्याकरण में इन अक्षरों को अंत:स्थ कहते हैं। यथा—

य्, र्, ल्, व्।

3. ऊष्म (Sibilant)— इनका उच्चारण थोड़ा रगड़ के साथ होता है। ये चार हैं—

श्, ष्, स्, ह्।

व्यंजनों के तीन भेद हैं— स्पर्श, अन्त:स्थ, ऊष्म।

अंत:स्थ वर्णों को यण् भी कहा जाता है। स्पर्श 25, अंत:स्थ चार और ऊष्म चार हैं।

अयोगवाह (Improper)

संस्कृत में निम्नलिखित चार ध्वनियों को अयोगवाह कहते हैं।

1. अनुस्वार— इसको स्वर के ऊपर अंकित किया जाता है। यथा— अं, आं, इं, ऊं इत्यादि।

   स्पर्श वर्णों से पूर्व स्थित अनुस्वार तत्, तत् अक्षर के पंचम अक्षर में बदल जाता है। यथा—

   गंगा — गङ्गा दंत — दन्त

   झंडा — झण्डा

   अन्त:स्थ व ऊष्म वर्णों से पूर्व स्थित अनुस्वार में कोई अन्तर नहीं पड़ता है। यथा—

   (क) संस्कृत, संस्कार। (ख) संयम, संयोग।

   (ग) संवरण, संवार। (घ) संहति, संहार।

2. विसर्ग— इसका प्रयोग स्वर के पश्चात् होता है। अः, इः, उः, ऋः इत्यादि।

   यह ध्वनि कहीं रेफ तथा कहीं श्, ष्, स् में परिवर्तित हो जाती है। यथा—

   हरि: गच्छति — हरिर्गच्छति। राम: तरति — रामस्तरति।

3. जिह्वा मूलीय— 'क' तथा 'ख' से पूर्व स्थित विसर्ग का नाम 'जिह्वा मूलीय' है।

   क ख

4. उपध्मानीय— 'प' तथा 'फ' से पूर्व स्थित विसर्ग का नाम उपध्मानीय है।

   प फ

संस्कृत में चार अयोगवाह हैं।

व्यंजनों के शुद्ध स्वरूप को प्रकट करने के लिए उसके नीचे हल् का चिह्न लगाया जाता है। यथा— क्

व्यंजन के साथ स्वर का योग होने पर उसका हल् चिह्न हट जाता है। यथा— क् + अ = क।

संयोग (Combination)

संस्कृत में दो या दो से अधिक वर्णों का संयोग देखा जाता है। कई व्यंजनों से मिलकर बनने वाला समुदाय संयुक्ताक्षर कहलाता है। संयुक्ताक्षरों को प्रकट करने की अग्रलिखित विधियाँ हैं।

1. प्रथम अक्षर की खड़ी रेखा को हटा दिया जाता है। यथा—

   न् + थ — न्थ (कन्था) न् + य — न्य (कन्या)

   म् + ब — म्ब (अवलम्ब) ल् + ल — ल्ल (तल्लीन)

2. प्रथम अक्षर को आधा करके लिखा जाता है। यथा—

   क् + त — क्त (भक्त) फ् + म — फ्म (कर्फ्यू)

   ह् + म — ह्म (ब्राह्मण)

3. यदि प्रथम घटक अक्षर रेफ हों तो उसे अगले वर्ण के सिर पर (ं) चिह्न द्वारा प्रकट किया जाता है। यथा—

   र् + म — र्म (कर्म) र् + ण — र्ण (कर्ण)

4. यदि द्वितीय घटक रेफ हों तो प्रथम घटक में रेफ को प्रविष्ट कर दिया जाता है। यथा—

क् + र् + अ — क्र (क्रम) ष् + ट् + र् + अ — ष्ट्र (राष्ट्र)

5. निम्न संयुक्ताक्षरों का स्वरूप अपने घटक वर्णों के स्वरूप से भिन्न होता है। यथा—

क् + ष — क्ष (क्षत्रिय) ज् + ञ — ज्ञ (ज्ञान)

द् + य — द्य (विद्या)

दो या अधिक व्यंजनों के समुदाय को संयुक्ताक्षर कहते हैं।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित की परिभाषा लिखिए—

व्यंजन _____

स्पर्श _____

प्लुत _____

स्वर _____

2. उदाहरण देकर समझाइए—

अयोगवाह _____

दीर्घ स्वर _____

3. निम्नलिखित में संयोग कीजिए और प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए—

ल् य, न् त, न् द, प् त, ञ् च, त् र, ह् म, क् र, र् क, म् र, र् म।

4. निम्नलिखित को वर्ण-विच्छेद करके लिखिए—

कद्रू, विद्यालय, अध्ययन, कल्प, राष्ट्र, इन्द्र, विधु

5. सही कथन को (✓) चिह्न से अंकित कीजिए—

(क) आ ह्रस्व स्वर है। (ख) दीर्घ स्वर आठ हैं। (ग) अन्तःस्थ चार है।

3 सन्धि
Joining

संस्कृत भाषा में दो वर्णों की अत्यधिक निकटता होने पर उनमें विकार स्वभाविक होता है। इस विकार को सन्धि कहते हैं। सन्धि के तीन भेद हैं—

1. स्वर सन्धि
2. व्यंजन सन्धि
3. विसर्ग सन्धि।

स्वर सन्धि (Joining of Vowels)

जब दो स्वर अत्यधिक समीप स्थित हो तो उनमें होने वाला परिवर्तन स्वर सन्धि कहलाता है।

स्वर सन्धि के अनेक भेद हैं, परंतु इस पुस्तक में निम्न तीन भेदों को दिखाया गया है—

1. दीर्घ सन्धि— ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ वर्णों के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, आ जाएँ तो दोनों के स्थान पर एक दीर्घ अक्षर (आ, ई, ऊ, ॠ) होता है—

अ	+	अ	=	आ	→
अ	+	आ	=	आ	→
आ	+	अ	=	आ	→
आ	+	आ	=	आ	→
इ	+	इ	=	ई	→
इ	+	ई	=	ई	→

अत्र	+	अपि	=	अत्रापि।
परम	+	अर्थः	=	परमार्थः।
देव	+	आलयः	=	देवालयः।
हिम	+	आलयः	=	हिमालयः।
तदा	+	अपि	=	तदापि।
विद्या	+	अध्ययनम्	=	विद्याध्ययनम्।
विद्या	+	आलयः	=	विद्यालयः।
महा	+	आत्मा	=	महात्मा।
मुनि	+	इह	=	मुनीह।
कवि	+	इह	=	कवीह।
मुनि	+	ईशः	=	मुनीशः।
कपि	+	ईशः	=	कपीशः।

इ	+	इ	=	ई	→	मही	+	इन्द्र	=	महीन्द्र
						लक्ष्मी	+	इन्द्र	=	लक्ष्मीन्द्र
इ	+	ई	=	ई	→	मही	+	ईश	=	महीश
						उर्वी	+	ईश	=	उर्वीश
उ	+	उ	=	ऊ	→	गुरु	+	उपदेश	=	गूरूपदेश
						भानु	+	उदय	=	भानूदय
ऊ	+	उ	=	ऊ	→	वधु	+	उत्सव	=	वधूत्सव
						वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव
ऊ	+	ऊ	=	ऊ	→	चमू	+	ऊर्जा	=	चमूर्जा
ऋ	+	ऋ	=	ॠ	→	पितृ	+	ऋणम्	=	पितॄणम्
						मातृ	+	ऋणम्	=	मातॄणम्

2. गुण सन्धि— अ या आ के बाद इ ई, उ ऊ, ऋ, ॠ हो तो निम्न प्रकार से गुण सन्धि होती है।

अ	+	इ	=	ए	→	जन	+	इह	=	जनेह
						सुर	+	इह	=	सुरेह
आ	+	इ	=	ए	→	लता	+	इन्द्र	=	लतेन्द्र
						राका	+	इह	=	राकेह
अ	+	ई	=	ए	→	जन	+	ईश	=	जनेश
						नर	+	ईश	=	नरेश
आ	+	ई	=	ए	→	महा	+	ईश्वर	=	महेश्वर
						रमा	+	ईश	=	रमेश
अ	+	उ	=	ओ	→	सूर्य	+	उदय	=	सूर्योदय
						हित	+	उपदेश	=	हितोपदेश
अ	+	ऋ	=	अर्	→	सप्त	+	ऋषि	=	सप्तर्षि
						देव	+	ऋषि	=	देवर्षि
अ	+	ऊ	=	ओ	→	प्रिय	+	ऊह	=	प्रियोह
						एक	+	ऊनम्	=	एकोनम्
आ	+	ऊ	=	ओ	→	महा	+	ऊर्मि	=	महोर्मि
						गंगा	+	ऊर्मि	=	गंगोर्मि
आ	+	ऋ	=	अर्	→	महा	+	ऋषि	=	महर्षि

3. वृद्धि सन्धि— अ या आ के बाद ए, ऐ हों तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' होता है तथा ओ, औ हों तो दोनों के स्थान पर 'औ' होता है।

अ	+	ए	=	ऐ	→	एक	+	एकम्	=	एकैकम्
						एक	+	एकः	=	एकैकः

आ	+	ए	=	ऐ	→	लता	+	एकः	=	लतैकः
						महा	+	एकः	=	महैकः
अ	+	ऐ	=	ऐ	→	अत्र	+	ऐश्वर्यम्	=	अत्रैश्वर्यम्
						मत	+	ऐक्यम्	=	मतैक्यम्
आ	+	ऐ	=	ऐ	→	महा	+	ऐरावतः	=	महैरावतः
						महा	+	ऐश्वर्यम्	=	महैश्वर्यम्
अ	+	ओ	=	औ	→	जल	+	ओघः	=	जलौघः
						जन	+	ओघः	=	जनौघः
आ	+	ओ	=	औ	→	महा	+	ओघः	=	महौघः
						गंगा	+	ओघः	=	गंगौघः
अ	+	औ	=	औ	→	परम	+	औषधम्	=	परमौषधम्
						तव	+	औदार्यम्	=	तवौदार्यम्
आ	+	औ	=	औ	→	महा	+	ओषधम्	=	महौषधम्
						महा	+	औदार्यम्	=	महौदार्यम्

4. यण् सन्धि— ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ के पश्चात् कोई भिन्न स्वर हों तो इनके स्थान पर क्रमशः य्, व्, र् तथा ल् हो जाते हैं। यथा—

इ	+	स्वर	=	य्	+	स्वर	→	इति	+	अत्र	=	इत्यत्र
								इति	+	आदिः	=	इत्यादिः
								मति	+	अपि	=	मत्यपि
ई	+	स्वर	=	य्	+	स्वर	→	देवी	+	अत्र	=	देव्यत्र
								कवि	+	अत्र	=	कव्यत्र
								हरि	+	अपि	=	हर्यपि
उ	+	स्वर	=	व्	+	स्वर	→	मधु	+	अरिः	=	मध्वरिः
								सु	+	आगतम्	=	स्वागतम्
								साधु	+	अपि	=	साध्वपि
ऊ	+	स्वर	=	व्	+	स्वर	→	वधू	+	अत्र	=	वध्वत्र
								वधू	+	अपि	=	वध्वपि
ऋ	+	स्वर	=	र्	+	स्वर	→	पितृ	+	अत्र	=	पित्र
								पितृ	+	अपि	=	पित्रपि
ऌ	+	स्वर	=	ल्	+	स्वर	→	ऌ	+	आदेशः	=	लादेशः

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित की परिभाषा लिखिए—

सन्धि _____

गुण सन्धि _____

वृद्धि सन्धि _____

स्वर सन्धि _____

2. निम्नलिखित में सन्धि कीजिए—

नदी + इन्द्र = _____

इति + अपि = _____

अपि + अत्र = _____

मधु + अत्र = _____

तव + औदार्यम् = _____

मही + इन्द्रः = _____

नर + इन्द्रः = _____

हरि + अपि = _____

3. निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

जलोर्मिः _____

चन्द्रोदयः _____

सूक्तिः _____

ममापि _____

विधूदयः _____

स्वागतम् _____

दिनेशः _____

महेन्द्रः _____

4 लिङ्ग Gender

प्रथम अध्याय में बताया जा चुका है कि संस्कृत में लिङ्ग तीन प्रकार के होते हैं छात्र लिङ्ग ज्ञान के लिए निम्नलिखित तालिका का अवलोकन कीजिए।

1. अकारान्त (Ending in अ)— ये शब्द या तो पुल्लिग होते हैं या नपुंसक लिंङ्ग।

(क) निम्नलिखित शब्द पुल्लिङ्ग हैं–

हर:	=	शंकर	भालुक:	=	रीछ	पिक:	=	कोयल
मण्डूक:	=	मेंढ़क	मेघ:	=	बादल	खग:	=	पक्षी
कपोत:	=	कबूतर	नर:	=	मनुष्य	राम:	=	राम
गर्णन:	=	लोभी	घन:	=	बादल	अन्ध:	=	अन्धा
गज:	=	हाथी	अर्चक:	=	पुजारी	मृग:	=	हिरण
मल्ल:	=	पहलवान	शुक:	=	तोता	अनल:	=	अग्नि
नकुल:	=	नेवला	चन्द्र:	=	चन्द्रमा	यज्ञ:	=	यज्ञ
मातुल:	=	मामा	खग:	=	पक्षी	तनय:	=	पुत्र
पट:	=	कपड़ा	श्येन:	=	बाज	छाग:	=	बकरा
कोक:	=	चकवा	वायस:	=	कौआ	कपि:	=	वानर

(ख) निम्नलिखित शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं–

फल	=	फल	दर्पण	=	शीशा	उपवन	=	बगीचा
भोजन	=	खुराक	उदक	=	जल	तोय	=	पानी
अञ्जन	=	सुरमा	मित्र	=	मित्र	धन	=	धन
नेत्र	=	आँख	दास्य	=	दसता	श्रोत्र	=	कान
विष	=	जहर	चरित	=	चाल, चालन	जातिफल	=	जायफल
अमृत	=	जल, अमृत	भय	=	डर	वसन	=	वस्त्र
रजत	=	चाँदी	वृत्त	=	चरित्र	वदन	=	मुख
राज्य	=	राज	कमल	=	कमल	भाल	=	मस्तक
वदन	=	मुख	बाल्य	=	लड़कपन	जठर	=	पेट

2. आकारान्त (Ending in आ)— ये शब्द स्त्रीलिंङ्ग होते है—

अविधा	=	अज्ञान	चर्चा	=	विचार	अचला	=	पृथ्वी
चिकित्सा	=	इलाज	खेला	=	खेल	जाया	=	स्त्री
गदा	=	गदा	अयोध्या	=	प्रसिद्ध नगर	गंगा	=	प्रसिद्ध नदी
सुता	=	पुत्री	क्षमा	=	माफी	उग्रता	=	भयानकता
काष्टा	=	दिशा	आत्मजा	=	पुत्री			
अर्चा	=	पूजा, मूर्ति	कृपा	=	दया			

3. निम्नलिखित इकारान्त (Ending in इ) — शब्द पुल्लिंङ्ग है—

रवि	=	सूर्य	सुचि	=	ग्रीष्म	अतिथि	=	मेहमान
अग्नि	=	आग	अरि	=	शत्रु	गिरि	=	पर्वत
कपि	=	वानर	पति	=	पति	सन्धि	=	मेल
रश्मि	=	किरण	सप्ति	=	घोड़ा	भूपति	=	राजा
निधि	=	खजाना	मणि	=	मणि	तरणि	=	सूर्य
राशि	=	ढेर	अहि	=	साँप	वारिधि	=	सागर

4. निम्नलिखित इकारान्त शब्द स्त्रीलिंङ्ग है—

भक्ति	=	भक्ति	विचि	=	तरंग	स्तुति	=	स्तुति
नीति	=	नीति	भूमि	=	पृथ्वी	कटि	=	कमर
मुक्ति	=	मोक्ष	खनि	=	खान	रजनि	=	रात्रि
गीति	=	गान	रुचि	=	अनुराग			

5. निम्नलिखित इकारान्त शब्द नपुंसकलिंङ्ग है—

साथि	=	जंघा	अस्थि	=	हड्डी	अक्षि	=	आँख
दाधि	=	दही	वारि	=	जल			

5 शब्द-रूप
Declension

शब्दों का वर्गीकरण

समग्र शब्द राशि को लिङ्ग के आधार पर तीन वर्गों में बाँटा जाता है।

1. पुल्लिङ्ग 2. स्त्रीलिंङ्ग 3. नपुंसकलिंङ्ग

पुनः प्रत्येक वर्ग के अजन्त व हलन्त के दो-दो उपवर्ग होते हैं। इस प्रकार शब्दों के कुल छः उपवर्ग होते है।

(क) अजन्त (Ending in Vowel)— जिन शब्दों के अन्त में स्वर होता है: राम, लता, साधु

(ख) हलन्त (Ending in Consonent)— जिन शब्दों के अन्त में व्यंजन होता है: राजन्, चन्द्रमस्, सरित् उपर्युक्त छ उपवर्ग इस प्रकार हैं—

अजन्त पुल्लिङ्ग (Ending in Vowel)

बालः

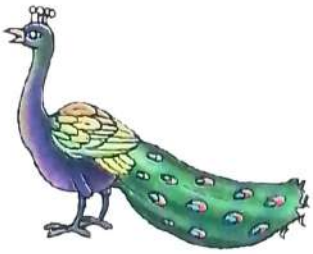

मयूरः

शुकः

अजन्त स्त्रीलिंङ्ग (Ending in Vowel)

बाला

खट्वा

लता

ललना

नौका

ग्रीवा

अजन्त नपुंसकलिंङ्ग (Ending in Vowel)

पुष्पम्

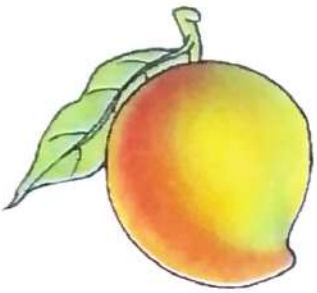

फलम्

वस्त्रम्

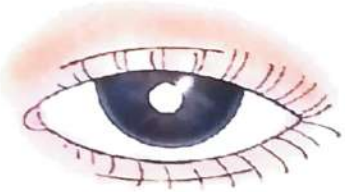

नयनम्

पुष्पम्

छत्रम्

हलन्त पुल्लिंङ्ग (Ending in Consonant)

राजन्

चन्द्रमस्

हलन्त स्त्रीलिंङ्ग (Ending in Vowel)

स्रज्

सरित्

वाच् (वाणी)

हलन्त नपुंसकलिंग (Ending in Consonant Neuter)

पयः (पयस्) (दूध)

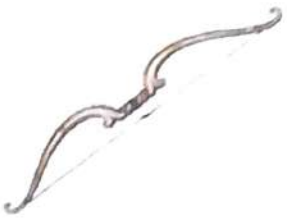

धनुः (धनुस्) (धनुष)

संस्कृत के सभी संज्ञा शब्दों को छह उपसमूहों में विभक्त किया जाता है।

जिस शब्द के अंत में स्वर होता है, उसे अजन्त शब्द कहते हैं।

जिस शब्द के अंत में व्यंजन होता है, उसे हलन्त शब्द कहते हैं।

शब्द रूप (Declension)

हिंदी भाषा मे शब्द के साथ कारक सूचक (ने, को आदि) चिह्न जोड़े जाते हैं। उसी प्रकार संस्कृत भाषा में कारक व वचन के चिह्न को शब्द के साथ जोड़ा जाता है। इस चिह्न से युक्त शब्द को शब्द रूप कहा जाता है।

संस्कृत में सात विभक्तियाँ होती हैं। प्रत्येक में तीन वचन होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक शब्द के 21 (7 × 3) शब्द रूप होते हैं। संबोधन को मिलाने पर कुल 24 शब्द रूप बनते हैं।

विभक्ति से युक्त शब्द को शब्द रूप कहा जाता है।

पाठ्यक्रम में निर्धारित कुछ शब्दों के शब्द रूप।

(क) अजन्त पुल्लिङ्ग (Ending in Vowel, Masculine)
अकारान्त, पुल्लिङ्ग (Ending in अ, Masculine)

1. बालक (Boy)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः (बालक ने)	बालकौ (दो बालकों ने)	बालकाः (सब बालकों ने)
द्वितीया	बालकम् (बालक को)	बालकौ (दो बालकों को)	बालकान् (सब बालकों को)
तृतीया	बालकेन (बालक से) के द्वारा	बालकाभ्याम् (दो बालकों से) के द्वारा	बालकैः (सब बालकों से) के द्वारा
चतुर्थी	बालकाय (बालक के लिए)	बालकाभ्याम् (दो बालकों के लिए)	बालकेभ्यः (सब बालकों के लिए)
पञ्चमी	बालकात् (बालक से अलग)	बालकाभ्याम् (दो बालकों से अलग)	बालकेभ्यः (सब बालकों से अलग)

षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
	(बालक का)	(दो बालकों का)	(सब बालकों का)
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
	(बालक में)	(दो बालकों में)	(सब बालकों में)
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!
	(हे बालक)	(हे दो बालकों)	(हे सब बालकों)

इसी प्रकार राम, छात्र, विद्यालय, देव, जन, गज, देश, ग्राम, शब्द, अश्व, नृप आदि शब्दों के रूप बनते हैं।

विशेष — जिस शब्द में ऋकार, रेफ व षकार होता है, उसके कुछ रुपों में अंतर आ जाता है। इन्हें नीचे प्रदर्शित किया गया है। छात्र ध्यान से अवलोकन करें।

2. नृप (राजा) (King)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नृपः	नृपौ	नृपाः
द्वितीया	नृपम्	नृपौ	नृपान्
तृतीया	नृपेण	नृपाभ्याम्	नृपैः
चतुर्थी	नृपाय	नृपाभ्याम्	नृपेभ्यः
पञ्चमी	नृपात्	नृपाभ्याम्	नृपेभ्यः
षष्ठी	नृपस्य	नृपयोः	नृपाणाम्
सप्तमी	नृपे	नृपयोः	नृपेषु
सम्बोधन	हे नृप!	हे नृपौ!	हे नृपाः!

इस प्रकार के अन्य शब्द:

पुत्र, सर्प, नर, मूषक, व्याघ्र, सूकर, चन्द्र, सूर्य, छात्र

3. राम (Ram)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

इकारान्त पुल्लिङ्ग (Ending in इ, Masculine)

4. मुनि (Muni)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनि	मुनी	मुनय
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभि
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्य
पञ्चमी	मुने:	मुनिभ्याम्	मुनिभ्य
षष्ठी	मुने:	मुन्यो:	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्यो	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनय

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'मुनि' शब्द की तरह होते है।

कवि, अग्नि, विधि, भूपति, निधि, कपि

निम्नलिखित शब्दो के रूपो मे 'मुनि' के शब्द रूपो मे कही कही भिन्नता देखी जाती है।

5. महर्षि (Maharshi)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महर्षि:	महर्षी	महर्षय:
द्वितीया	महर्षिम्	महर्षी	महर्षीन्
तृतीया	महर्षिणा	महर्षीभ्याम्	महर्षीभि:
चतुर्थी	महर्षे:	महर्षीभ्याम्	महर्षीभ्य:
पञ्चमी	महर्षे:	महर्षीभ्याम्	महर्षीभ्य:
षष्ठी	महर्षो:	महर्ष्यो:	महर्षीणाम्
सप्तमी	महर्षौ	महर्ष्यो:	महर्षिषु
सम्बोधन	हे महर्षे!	हे महर्षी!	हे महर्षय: !

इस प्रकार के अन्य शब्द:

हरि, गिरि, अरि, ऋषि, अद्रि, रवि

उकारान्त पुल्लिङ्ग (Ending in उ, Masculine)

6. साधु (Saint)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधु:	साधू	साधव:
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधूना	साधुभ्याम्	साधूभि:
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्य:

पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो!	हे साधू!	हे साधवः!

अन्य शब्दः

विधु, शिशु, भानु, पशु, परशु, इन्दु

निम्नलिखित शब्दों के शब्द रूप तृतीया एकवचन तथा षष्ठी बहुवचन में 'साधु' के रूपों में भिन्न होते हैं।

तरु, प्रभु, रिपु, गुरु, इक्षु

(ख) अजन्त स्त्रीलिंङ्ग (Ending in Vowel, Feminine)
अकारान्त, स्त्रीलिंङ्ग (Ending in आ, Feminine)

7. लता (Creeper)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते!	हे लते!	हे लताः!

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'लता' की तरह होते हैं।

माला, सीता, जंघा, शाखा, शाला, गदा

विशेष— निम्नलिखित शब्दों के षष्ठी बहुवचन में पूर्वोक्तणत्व होता है।

रमा, ग्रीवा, मुद्रा

इकारान्त, स्त्रीलिंङ्ग (Ending in इ, Feminine)

8. मति (Mind)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मतये, मत्यै	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मतेः, मत्याः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः

षष्ठी	मतेः, मत्याः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मतौ, मत्याम्	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते	हे मती	हे मतयः

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'मति' की तरह होते हैं

शक्ति, आकृति, कीर्ति, गति, नीति, बुद्धि

(ग) अजन्त नपुंसकलिंग (Ending in Vowel, Neuter)
अकारान्त, नपुंसकलिंग (Ending in अ, Neuter)

9 जल (Water)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जलम्	जले	जलानि
द्वितीया	जलम्	जले	जलानि
तृतीया	जलेन	जलाभ्याम्	जलैः
चतुर्थी	जलाय	जलाभ्याम्	जलेभ्यः
पंचमी	जलात्	जलाभ्याम्	जलेभ्यः
षष्ठी	जलस्य	जलयोः	जलानाम्
सप्तमी	जले	जलयोः	जलेषु
सम्बोधन	हे जल!	हे जले!	हे जलानि!

विशेष– तृतीया से लेकर संबोधन तक नपुंसकलिंग व पुंलिंग के शब्दों के रूप एक समान होते हैं। निम्नलिखित शब्दों के रूप 'जल' की तरह होते हैं।

धन, वस्त्र, नयन, सलिल, नेत्र, मुख, पंकज, कमल, पुस्तक, वन, वदन, पुष्प

इकारान्त, नपुंसकलिंग (Ending in इ, Neuter)

10 वारि (W)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारे, हे वारि!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

(घ) हलन्त, पुल्लिंङ्ग (Ending in Consonant, Masculine)
नकारान्त, पुल्लिंङ्ग (Ending in न्, Neuter)

11. राजन् (राजा) (King)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजान:
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञ:
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभि:
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्य:
पञ्चमी	राज्ञ:	राजभ्याम्	राजभ्य:
षष्ठी	राज्ञ:	राज्ञो:	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञो:	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजान:!

सकारान्त, पुल्लिंङ्ग (Ending in स्, Masculine)

12. चन्द्रमस् (चन्द्रमा) (Moon)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चन्द्रमा:	चन्द्रमसौ	चन्द्रमस:
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमस:
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभि:
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्य:
पञ्चमी	चन्द्रमस:	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्य:
षष्ठी	चन्द्रमस:	चन्द्रमसो:	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसो:	चन्द्रमस्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रम:!	हे चन्द्रमसौ!	हे चन्द्रमस:!

(ङ) हलन्त, स्त्रीलिंङ्ग (Ending in Consonant, Feminine)
तकारान्त, स्त्रीलिंङ्ग (Ending in त्, Feminine)

13. सरित् (नदी) (River)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरित:
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरित:
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भि:
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्य:
पञ्चमी	सरित:	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्य:
षष्ठी	सरित:	सरितो:	सरिताम्

सप्तमी	सरिति	सरितो:	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्!	हे सरितौ!	हे सरित:!

(च) हलन्त, नपुंसकलिंङ्ग (Ending in Consonant, Neuter)
सकारान्त, नपुंसकलिंङ्ग (Ending in स, Neuter)

14. मनस् (मन) (Mind)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मन:	मनसी	मनांसि
द्वितीया	मन:	मनसी	मनांसि
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभि:
चतुर्थी	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्य:
पञ्चमी	मनस:	मनोभ्याम्	मनोभ्य:
षष्ठी	मनस:	मनसो:	मनसाम्
सप्तमी	मनसि	मनसो:	मनस्सु
सम्बोधन	हे मन:!	हे मनसी!	हे मनांसि!

(छ) सर्वनाम शब्द (Pronoun)

15. तद् पुल्लिंङ्ग (Masculine)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स: (वह)	तौ	ते
द्वितीया	तम् (उसको, उसे)	तौ	तान्
तृतीया	तेन (उसके द्वारा)	ताभ्याम्	तै:
चतुर्थी	तस्मै (उसके लिए)	ताभ्याम्	तेभ्य:
पञ्चमी	तस्मात् (उससे)	ताभ्याम्	तेभ्य:
षष्ठी	तस्य (उसका)	तयो:	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन् (उसमें, पर)	तयो:	तेषु

16. तद्, नपुंसकलिंङ्ग (Neuter)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तै:
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्य:
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्य:
षष्ठी	तस्य	तयो:	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयो:	तेषु

विशेष— नपुंसकलिंङ्ग में प्रथम व द्वितीया को छोड़कर शेष रूप पुल्लिंङ्ग के समान होते हैं।

17. तद्, स्त्रीलिंङ्ग (Feminine)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

18. अस्मद् मैं, हम (I, We)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मात्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

19. युष्मद् तू, तुम (You)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	यूष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

(ज) संख्यावाचक शब्द (Numerals)

1. एक (One)

'एक' शब्द एकवचन होता है। अतः इसके रूप तीनों लिंगों में एकवचन में ही होते हैं।

विभक्ति	पुल्लिंग	नपुंसकलिंग	स्त्रीलिंग
प्रथमा	एकः	एकम्	एका
द्वितीया	एकम्	एकम्	एकाम्
तृतीया	एकेन	एकेन	एकया

चतुर्थी	एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्याः
षष्ठी	एकस्य	एकस्य	एकस्याः
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

2. द्वि (दो) (Two)

'द्वि' शब्द द्विवचन है। अत: इसके रूप तीनों लिंगों में द्विवचन में ही होते हैं—

विभक्ति	पुल्लिंग	नपुंसकलिंग	स्त्रीलिंग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे

तृतीया से सप्तमी तक के रूप तीनों लिङ्गों में एक समान हैं।

तृतीय, चतुर्थी, पञ्चमी— द्वाभ्यासम्

षष्ठी और सप्तमी— द्वयो:

3. त्रि (तीन) (Three)

यह बहुवचन है। अत: इसके रूप केवल बहुवचन में ही होते हैं—

विभक्ति	पुल्लिंग	नपुंसकलिंग	स्त्रीलिंग
प्रथमा	त्रय:	त्रीणि	तिस्र:
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्र:
तृतीया	त्रिभि:	(शेष रूप	तिसृभि:
चतुर्थी	त्रिभ्य:	पुल्लिंङ्ग	तिसृभ्य:
पञ्चमी	त्रिभ्य:	के समान)	तिसृभ्य:
षष्ठी	त्रयाणाम्		तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु		तिसृषु

संख्या (Number)

1.	एक	—	One	11.	एकादश	—	Eleven
2.	द्वि	—	Two	12.	द्वादश	—	Twelve
3.	त्रि	—	Three	13.	त्रयोदश	—	Thirteen
4.	चतुर्	—	Four	14.	चतुर्दश	—	Fourteen
5.	पञ्च	—	Five	15.	पञ्चदश	—	Fifteen
6.	षट्	—	Six	16.	षोडश	—	Sixteen
7.	सप्त	—	Seven	17.	सप्तदश	—	Seventeen
8.	अष्ट	—	Eight	18.	अष्टदश	—	Eighteen
9.	नव	—	Nine	19.	नवदश/एकोनविंशति:	—	Nineteen
10.	दश	—	Ten	20.	विंशति:	—	Twenty

शब्द रूपों का प्रयोग

1. हरि पाठ पढ़ता है।	—	हरि: पाठं पठति।
2. बच्चे हँसते है	—	बालका: हसन्ति।
3. लड़की पाठशाला जाती है।	—	बालिका पाठशाला गच्छति।
4. बच्चा चंद्रमा को देखता है।	—	बाल: चन्द्रमसं पश्यति।
5. बच्चा खेलता है।	—	बाल: क्रीडति।
6. साधु जाता है।	—	साधु: गच्छति।
7. हमारा घर शहर में है।	—	अस्माकं गृहं नगरे अस्ति।
8. तुम्हारा नाम क्या है।	—	तव नाम किम् अस्ति।
9. यह राजा का महल है।	—	अयं राज्ञ: प्रसाद: अस्ति।
10. ये दो आम हैं।	—	इमें द्वे आम्रे स्त:।
11. तुम्हारे पिता अध्यापक हैं।	—	तव पिता अध्यापक: अस्ति।
12. मेरे पिता डॉक्टर हैं।	—	मम पिता चिकित्सक: अस्ति।
13. मैं गीता पढ़ता हूँ।	—	अहं गीतां पठामि।
14. तु गीत गाता है।	—	त्वं गीतं गायसि।
15. बेल पर तीन फूल हैं।	—	लतायां त्रीणि पुष्पाणि सन्ति।
16. वृक्ष पर तोते बैठे हैं।	—	वृक्षे शुका: तिष्ठन्ति।
17. राम धूप में बैठा है।	—	राम: आपते उपविष्ट: अस्ति।
18. नदी में मगरमच्छ है।	—	सरिति मकरा: सन्ति।
19. यह मेरी पुस्तक है।	—	इदं मम पुस्तकम् अस्ति।
20. ये चार वेद हैं।	—	एते चत्वार: वेदा: सन्ति।
21. हम छकड़े से जाते हैं।	—	वयं शकटेन गच्छाम:।
22. घर के बाहर वृक्ष है।	—	गृहाद् बहि: वृक्ष: अस्ति।
23. यह पेड़ की शाखा है।	—	इयं तरो: शाखा अस्ति।
24. वृक्ष पर बंदर हैं।	—	वृक्षे कपय: तिष्ठन्ति।
25. मेरा भाई बनारस में रहता है।	—	मम भ्राता वाराणस्यां वसति।
26. तुम्हारा मामा मेरठ में रहता है।	—	तव मातुल: मयराष्ट्रे वसति।
27. छत पर बंदर है।	—	हर्म्ये वानरा: सन्ति।
28. जंगल में पशु घूम रहे हैं।	—	वन पशव: भ्रमन्ति।
29. यह महर्षि कण्व का आश्रम है।	—	अयं महर्षे: कण्वस्य आश्रम: अस्ति।
30. गंगा का पानी पवित्र है।	—	गंगाया: जलं पवित्रम् अस्ति।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. यथा निर्दिष्ट रूप लिखिए—

बालक	—	चतुर्थी	_____	लता	—	पञ्चमी	_____
पुष्प	—	प्रथमा	_____	मति	—	षष्ठी	_____
युष्मद्	—	सप्तमी	_____	मुनि	—	तृतीया	_____
मनस्	—	प्रथमा	_____	जल	—	द्वितीया	_____
राजन्	—	षष्ठी	_____				

2. निम्नलिखित की विभक्ति लिखिए—

रामानाम्	_____	लताणाम्	_____
साधुनाम्	_____	हरीनाम्	_____
मतिना	_____	रामेन	_____
छात्रेन	_____	नृपानाम्	_____
अस्मदस्य	_____	आवानाम्	_____

3. निम्नलिखित को शुद्ध करके लिखिए—

(क) द्वौ फलानि। _____

(ख) तिस्र: पुरुषा:। _____

(ग) चत्वारि स्त्रिय:। _____

(घ) एक: पुष्पम्। _____

(ङ) एका जन:। _____

(च) एकम् बालिका। _____

(छ) द्वे बालके। _____

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) श्रेया विद्यालय जाती है।

_____

(ख) यह महर्षि कण्व का आश्रम है।

_____

(ग) तुम्हारा घर कहाँ है?

_____

(घ) गंगा का जल शीतल है।

_____

(ङ) मेरे पिता चिकित्सक है।

_____

(च) क्या तुम्हारी माता भी अध्यापिका हैं ?

_____

6 धातु-रूप

Conjunction

धातु (Root)

भाषा में दो प्रकार के शब्द होते हैं— संज्ञा शब्द व क्रिया शब्द। जिसके द्वारा कार्य के होने का ज्ञान हो उसे क्रिया (Verb) कहते हैं। यथा— पठति = पढ़ता है।

संस्कृत व्याकरण में क्रिया पदों के मूल में एक अंश की कल्पना की गई है। इस मूल अंश को धातु (Root) कहते हैं। यथा— पठति, पठसि, पठामि— तीन क्रियापद हैं। इसमें 'पठ्' धातु हैं।

धातु के प्रकार (Kinds of Roots)

धातु दो प्रकार की होती है।

1. सकर्मक— जिस धातु में कर्म होता है, उसे सकर्मक धातु कहा जाता है। यथा—
   - (क) चन्द्रलेखा पाठं पठति। — चन्द्रलेखा पाठ पढ़ती है।
   - (ख) सोमलेखा जलं पिबति। — सोमलेखा जल पीती है।
2. अकर्मक— जिस धातु में कर्म नहीं होता है, उसे अकर्मक धातु कहा जाता है। यथा—
   - (क) आशुः हसति। — आशु हँसता है।
   - (ख) रमा तत्र तिष्ठति। — रमा वहाँ बैठती है।

   इसी प्रकार स्था, हस्, चल्, क्रीड् तथा शी आदि धातु अकर्मक हैं।

क्रिया के द्वारा कार्य का होना पाया जाता है। क्रिया पद के मूल अंश को धातु कहते हैं। जिसमें कर्म हो उसे सकर्मक धातु तथा जिस में कर्म न हो उसे अकर्मक धातु कहते हैं।

संस्कृत व्याकरण में लगभग 2000 धातु मानी गई हैं। शब्द रचना की दृष्टि से धातुओं को दस वर्गों में विभक्त किया गया है, इन्हें गण (Group) कहा जाता है जो इस प्रकार हैं—

1.	भ्वादिगण।	यथा— भू, पठ् इत्यादि।	6.	तनादिगण।	यथा— तन् इत्यादि।
2.	अदादिगण।	यथा— अद्, अस् इत्यादि।	7.	रुधदिगण।	यथा— रुध्, भुज् इत्यादि।
3.	जुहोत्यादिगण।	यथा— हु, दा इत्यादि।	8.	तुदादिगण।	यथा— तुद्, प्रच्छ् इत्यादि।
4.	दिवादिगण।	यथा— दिव्, जन् इत्यादि।	9.	क्र्यादिगण।	यथा— क्री, ज्ञा इत्यादि।
5.	स्वादिगण।	यथा—सु, श्रु इत्यादि।	10.	चुरादिगण।	यथा— चुर्, कथ् इत्यादि।

सातवी कक्षा में निम्नलिखित 5 गणों के धातु पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं।

1. भ्वादि 2. अदादि 3. दिवादि 4. तुदादि तथा 5. चुरादि।

संस्कृत में दस गण हैं। संस्कृत में लगभग 2000 धातु हैं।

लकार (Tense, Mood)

संस्कृत में काल व वृत्ति के लिए लकार शब्द का प्रयोग होता है। संस्कृत में दस लकार है, परंतु पाठ्यक्रम में केवल चार लकार निर्धारित है।

1. लट् लकार — वर्तमान काल (Present Tense)
2. लङ् लकार — भूतकाल काल (Past Tense)
3. लृट् लकार — भविष्यत् काल (Future Tense)
4. लोट् लकार — आज्ञार्थक (Imperative Mood)

पद (Steps)

अर्थ की दृष्टि से धातु तीन प्रकार की होती है।

1. परस्मैपदी— इन धातुओं के साथ लट् लकार में 'ति' आदि प्रत्यय जुड़ते हैं। भू, गम्, पठ् आदि परस्मैपदी धातु हैं।
2. आत्मनेपदी— इन धातुओं के साथ लट् लकार में 'ते' आदि प्रत्यय जुड़ते हैं। सेव्, लभ् आदि धातु आत्मनेपदी हैं।
3. उभयपदी— इन धातुओं के साथ पूर्वोक्त दोनों प्रकार के प्रत्यय जुड़ते हैं। नी, याच् आदि धातु उभयपदी हैं।

काल या वृत्ति को लकार कहते हैं।

संस्कृत में पद दो हैं— परस्मैपद व आत्मने पद।

लकार बोधक निम्नलिखित प्रत्यय जोड़कर धातु रूप बनाए जाते हैं।

परस्मैपद (Conjugations in Parasmaipada)

लट् लकार (Present Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	त:	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थ:	थ
उत्तम पुरुष	(आ) मि	(आ) व:	(आ) म:

लङ् लकार (Past Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	स्(:)	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	(आ) व	(आ) म

लङ् लकार में धातु से पूर्व 'अ' लगता है।

लृट् लकार (Future Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यति	स्यत:	स्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्यसि	स्यथ:	स्यथ:
उत्तम पुरुष	स्यामि	स्याव:	स्याम:

स्यति आदि से पहले धातु के अंत में अ, आ से भिन्न स्वर होने पर स्यति का ष्यति हो जाता है।

लोट् लकार (Imperative Tense)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तु, तात्	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	ते, तात्	तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

(क) भ्वादिगण

1. भू (होना) (To be)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवत:	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथ:	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवाव:	भवाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभव:	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यत:	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथ:	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्याव:	भविष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु, भवात्	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव, भवातत्	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

2. पठ् (पढ़ना) (To read)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठत:	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथ:	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठाव:	पठाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठ:	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यत:	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथ:	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्याव:	पठिष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

3. हस् (हँसना) (To Laugh)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसति	हसत:	हसन्ति
मध्यम पुरुष	हससि	हसथ:	हसथ
उत्तम पुरुष	हसामि	हसाव:	हसाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
मध्यम पुरुष	अहस:	अहसतम्	अहसत
उत्तम पुरुष	अहसम्	अहसाव	अहसाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यत:	हसिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथ:	हसिष्यथ
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	हसिष्याव:	हसिष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यम पुरुष	हस	हसतम्	हसत
उत्तम पुरुष	हसानि	हसाव	हसाम

4. **चल् (चलना) (To walk)**

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलति	चलत:	चलन्ति
मध्यम पुरुष	चलसि	चलथ:	चलथ
उत्तम पुरुष	चलामि	चलाव:	चलाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचलत्	अचलताम्	अचलन्
मध्यम पुरुष	अचल:	अचलतम्	अचलत
उत्तम पुरुष	अचलम्	अचलाव	अचलाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलिष्यति	चलिष्यत:	चलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चलिष्यसि	चलिष्यथ:	चलिष्यथ
उत्तम पुरुष	चलिष्यामि	चलिष्याव:	चलिष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चलतु	चलताम्	चलन्तु
मध्यम पुरुष	चल	चलतम्	चलत
उत्तम पुरुष	चलानि	चलाव	चलाम

5. **खेल् (खेलना) (To Play)**

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खेलति	खेलत:	खेलन्ति
मध्यम पुरुष	खेलसि	खेलथ:	खेलथ
उत्तम पुरुष	खेलामि	खेलाव:	खेलाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अखेलत्	अखेलताम्	अखेलन्
मध्यम पुरुष	अखेल:	अखेलतम्	अखेलत
उत्तम पुरुष	अखेलम्	अखेलाव	अखेलाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खेलिष्यति	खेलिष्यत:	खेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खेलिष्यसि	खेलिष्यथ:	खेलिष्यथ
उत्तम पुरुष	खेलिष्यामि	खेलिष्याव:	खेलिष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खेलतु	खेलताम्	खेलन्तु
मध्यम पुरुष	खेल	खेलतम्	खेलत
उत्तम पुरुष	खेलानि	खेलाव	खेलाम

6. **खाद् (खाना) (To Eat)**

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादति	खादतः	खादन्ति
मध्यम पुरुष	खादसि	खादथः	खादथ
उत्तम पुरुष	खादामि	खादावः	खादामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अखादत्	अखादताम्	अखादन्
मध्यम पुरुष	अखादः	अखादतम्	अखादत
उत्तम पुरुष	अखादम्	अखादाव	अखादाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
उत्तम पुरुष	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादतु	खादताम्	खादन्तु
मध्यम पुरुष	खाद	खादतम्	खादत
उत्तम पुरुष	खादानि	खादाव	खादाम

7. **वद् (बोलना) (To Speak)**

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथः	वदथ
उत्तम पुरुष	वदामि	वदावः	वदामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
मध्यम पुरुष	अवद:	अवदतम्	अवदत
उत्तम पुरुष	अवदम्	अवदाव	अवदाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदिष्यति	वदिष्यत:	वदिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वदिष्यसि	वदिष्यथ:	वदिष्यथ
उत्तम पुरुष	वदिष्यामि	वदिष्याव:	वदिष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदतु	वदताम्	वदन्तु
मध्यम पुरुष	वद	वदतम्	वदत
उत्तम पुरुष	वदानि	वदाव	वदाम

8. **धाव् (दौड़ना) (To Run)**

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धावति	धावत:	धावन्ति
मध्यम पुरुष	धावसि	धावथ:	धावथ
उत्तम पुरुष	धावामि	धावाव:	धावाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अधावत्	अधावताम्	अधावन्
मध्यम पुरुष	अधाव:	अधावतम्	अधावत
उत्तम पुरुष	अधावम्	अधावाव	अधावाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धाविष्यति	धाविष्यत:	धाविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	धाविष्यसि	धाविष्यथ:	धाविष्यथ
उत्तम पुरुष	धाविष्यामि	धाविष्याव:	धाविष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	धावतु	धावताम्	धावन्तु
मध्यम पुरुष	धाव	धावतम्	धावत
उत्तम पुरुष	धावानि	धावाव	धावाम

9. पत् (गिरना) (To Fall)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतति	पतत:	पतन्ति
मध्यम पुरुष	पतसि	पतथ:	पतथ
उत्तम पुरुष	पतामि	पताव:	पताम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपतत्	अपताताम्	अपतन्
मध्यम पुरुष	अपत:	अपततम्	अपतत
उत्तम पुरुष	अपतम्	अपताव	अपताम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतिष्यति	पतिष्यत:	पतिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पतिष्यसि	पतिष्यथ:	पतिष्यथ
उत्तम पुरुष	पतिष्यामि	पतिष्याव:	पतिष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पततु	पताताम्	पतन्तु
मध्यम पुरुष	पत	पततम्	पतत
उत्तम पुरुष	पतानि	पताव	पताम

10. अर्च् (पूजा करना) (To Worship)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चति	अर्चत:	अर्चन्ति
मध्यम पुरुष	अर्चसि	अर्चथ:	अर्चथ
उत्तम पुरुष	अर्चामि	अर्चाव:	अर्चाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आर्चत्	आर्चताम्	आर्चन्
मध्यम पुरुष	आर्चत:	आर्चतम्	आर्चत
उत्तम पुरुष	आर्चम्	आर्चाव	आर्चाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चिष्यति	अर्चिष्यत:	अर्चिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	अर्चिष्यसि	अर्चिष्यथ:	अर्चिष्यथ
उत्तम पुरुष	अर्चिष्यामि	अर्चिष्याव:	अर्चिष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अर्चतु	अर्चताम्	अर्चन्तु
मध्यम पुरुष	अर्च	अर्चतम्	अर्चत
उत्तम पुरुष	अर्चानि	अर्चाव	अर्चाम

11. **गर्ज् (गरजना) (To Thunder)**

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गर्जति	गर्जत:	गर्जन्ति
मध्यम पुरुष	गर्जसि	गर्जथ:	गर्जथ
उत्तम पुरुष	गर्जामि	गर्जाव:	गर्जाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगर्जत्	अगर्जताम्	अगर्जन्
मध्यम पुरुष	अगर्ज:	अगर्जतम्	अगर्जत
उत्तम पुरुष	अगर्जम्	अगर्जाव	अगर्जाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गर्जिष्यति	गर्जिष्यत:	गर्जिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गर्जिष्यसि	गर्जिष्यथ:	गर्जिष्यथ
उत्तम पुरुष	गर्जिष्यामि	गर्जिष्याव:	गर्जिष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गर्जतु	गर्जताम्	गर्जन्तु
मध्यम पुरुष	गर्ज	गर्जतम्	गर्जत
उत्तम पुरुष	गर्जानि	गर्जाव	गर्जाम

12. **वर्ष् (वर्षा होना) (To Rain)**

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्षति	वर्षत:	वर्षन्ति
मध्यम पुरुष	वर्षसि	वर्षथ:	वर्षथ
उत्तम पुरुष	वर्षामि	वर्षाव:	वर्षाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अवर्षत्	अवर्षताम्	अवर्षन्
मध्यम पुरुष	अवर्षः	अवर्षतम्	अवर्षत
उत्तम पुरुष	अवर्षम्	अवर्षाव	अवर्षाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्षिष्यति	वर्षिष्यतः	वर्षिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	वर्षिष्यसि	वर्षिष्यथः	वर्षिष्यथ
उत्तम पुरुष	वर्षिष्यामि	वर्षिष्यावः	वर्षिष्यामः

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्षतु	वर्षताम्	वर्षन्तु
मध्यम पुरुष	वर्ष	वर्षतम्	वर्षत
उत्तम पुरुष	वर्षाणि	वर्षाव	वर्षाम

13. भ्रम् (घूमना) (To Walk)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भ्रमति	भ्रमतः	भ्रमन्ति
मध्यम पुरुष	भ्रमसि	भ्रमथः	भ्रमथ
उत्तम पुरुष	भ्रमामि	भ्रमावः	भ्रमामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभ्रमत्	अभ्रमताम्	अभ्रमन्
मध्यम पुरुष	अभ्रमः	अभ्रमतम्	अभ्रमत
उत्तम पुरुष	अभ्रमम्	अभ्रमाव	अभ्रमाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
उत्तम पुरुष	भ्रमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भ्रमतु	भ्रमताम्	भ्रमन्तु
मध्यम पुरुष	भ्रम	भ्रमतम्	भ्रमत
उत्तम पुरुष	भ्रमानि	भ्रमाव	भ्रमाम

नोट: निम्नलिखित धातुओं के साथ लकार बोधक प्रत्यय जुड़ने पर उनके स्वरूप में प्रर्याप्त अंतर आ जाता है।

14. धा- पिब (पीना) (To Drink)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबत:	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथ:	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबाव:	पिबाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिब:	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्याव:	पास्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

15. गम्- गच्छ् (जाना) (To Go)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

16. दृश्- पश्य् (देखना) (To Look)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

17. स्था- तिष्ठ् (ठहरना) (To Stay)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठत:	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथ:	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठाव:	तिष्ठाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुष	अतिष्ठ:	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुष	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यत:	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथ:	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्याव:	स्थास्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुष	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुष	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

18. नी (ले जाना) (To Carry)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयति	नयत:	नयन्ति
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथ:	नयथ
उत्तम पुरुष	नयामि	नयाव:	नयाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम पुरुष	अनय:	अनयतम्	अनयत
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नेष्यति	नेष्यत:	नेष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नेष्यसि	नेष्यथ:	नेष्यथ
उत्तम पुरुष	नेष्यामि	नेष्याव:	नेष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यम पुरुष	नय	नयतम्	नयत
उत्तम पुरुष	नयानि	नयाव	नयाम

19. गै (गीत गाना) (To Sing)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गायति	गायत:	गायन्ति
मध्यम पुरुष	गायसि	गायथ:	गायथ
उत्तम पुरुष	गायामि	गायाव:	गायाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगायत्	अगायताम्	अगायन्
मध्यम पुरुष	अगाय:	अगायतम्	अगायत
उत्तम पुरुष	अगायम्	अगायाव	अगायाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गास्यति	गास्यत:	गास्यन्ति
मध्यम पुरुष	गास्यसि	गास्यथ:	गास्यथ
उत्तम पुरुष	गास्यामि	गास्याव:	गास्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गायतु	गायताम्	गायन्तु
मध्यम पुरुष	गाय	गायतम्	गायत
उत्तम पुरुष	गायानि	गायाव	गायाम

(ख) अदादिगण

20. अस् (होना) (To be)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्त:	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थ:	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्व:	स्म:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसी:	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अविष्यति	अविष्यत:	अविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	अविष्यसि	अविष्यथ:	अविष्यथ
उत्तम पुरुष	अविष्यामि	अविष्याव:	अविष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	अस्ताम	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

(ग) दिवादिगण

21. नश् (नष्ट होना) (To Perish)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यति	नश्यत:	नश्यन्ति
मध्यम पुरुष	नश्यसि	नश्यथ:	नश्यथ
उत्तम पुरुष	नश्यामि	नश्याव:	नश्याम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
मध्यम पुरुष	अनश्य:	अनश्यतम्	अनश्यत
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नक्ष्यति	नक्ष्यत:	नक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नक्ष्यसि	नक्ष्यथ:	नक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	नक्ष्यामि	नक्ष्याव:	नक्ष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

(घ) तुदादिगण

22. लिख् (लिखना) (To Write)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखत:	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथ:	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखाव:	लिखाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिख:	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यत:	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथ:	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्याव:	लेखिष्याम:

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

23. इष् (इच्छा करना) (To desire)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छति	इच्छत:	इच्छन्ति
मध्यम पुरुष	इच्छसि	इच्छथ:	इच्छथ
उत्तम पुरुष	इच्छामि	इच्छाव:	इच्छाम:

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
मध्यम पुरुष	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
उत्तम पुरुष	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
उत्तम पुरुष	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
मध्यम पुरुष	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
उत्तम पुरुष	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम

24. मिल् (मिलना) (To meet)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलति	मिलतः	मिलन्ति
मध्यम पुरुष	मिलसि	मिलथः	मिलथ
उत्तम पुरुष	मिलामि	मिलावः	मिलामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अमिलत्	अमिलताम्	अमिलन्
मध्यम पुरुष	अमिलः	अमिलतम्	अमिलत
उत्तम पुरुष	अमिलम्	अमिलाव	अमिलाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मेलिष्यति	मेलिष्यतः	मेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	मेलिष्यसि	मेलिष्यथः	मेलिष्यथ
उत्तम पुरुष	मेलिष्यामि	मेलिष्यावः	मेलिष्यामः

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मिलतु	मिलताम्	मिलन्तु
मध्यम पुरुष	मिल	मिलतम्	मिलत
उत्तम पुरुष	मिलानि	मिलाव	मिलाम

25. चुर् (चुराना) (To steal)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

लोट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयानि	चोरयाव	चोरयाम

26. चिन्त् (विचार करना) (To think)

लट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
मध्यम पुरुष	चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ
उत्तम पुरुष	चिन्तयामि	चिन्तयावः	चिन्तयामः

लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
मध्यम पुरुष	अचिन्तयः	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
उत्तम पुरुष	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम

लृट् लकार

	चिन्तयिष्यति	
	चिन्तयिष्यसि	
	चिन्तयिष्यामि	
	चिन्तयिष्यत	चिन्तयिष्यन्ति
	चिन्तयिष्यथ	चिन्तयिष्यथ
	चिन्तयिष्याव	चिन्तयिष्याम

लोट् लकार

	चिन्तयतु	
	चिन्तय	
	चिन्तयानि	
	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
	चिन्तयतम्	चिन्तयत
	चिन्तयाव	चिन्तयाम

वाक्यों में प्रयोग

1. त्यज् — छोड़ना।
   राम ने बीड़ी पीना छोड़ दिया। — रामः धूम्रपानम् अत्यजत्।
2. कूज् — चहचहाना।
   आकाश में पक्षी चहचहा रहे हैं। — गगने खगाः कूजन्ति।
3. अर्च् — पूजा करना।
   लेखा शिव की पूजा करती है। — लेखा शिवम् अर्चति।
4. खेल् — खेलना।
   बच्चे शाम को यहाँ खेलते हैं। — बालाः सायम् अत्र खेलन्ति।
5. धाव् — दौड़ना।
   हम मैदान में दौड़ेंगे। — वयं क्रीडाक्षेत्रे धाविष्यामः।
6. गर्व् — घमंड करना।
   दुष्ट व्यर्थ में घमंड करते हैं। — दुष्टाः वृथा गर्वन्ति।
7. क्रन्द् — चिल्लाना।
   बालक दूध के लिए चिल्लाता है। — बालकः दुग्धाय क्रन्दति।
8. खाद् — खाना।
   राम फलों को खाता है। — रामः फलानि खादति।
9. वर्ष् — वर्षा होना।
   आज वर्षा होगी। — अद्य वर्षा भविष्यति।
10. क्रीड् — खेलना।
    बच्चे मैदान में गेंद से खेलते हैं। — बालकाः क्रीडाक्षेत्रे कन्दुकेन क्रीडन्ति।
11. पा — पीना।
    बच्चे ने दूध पीया। — शिशुः दुग्धम् अपिबत्।
12. घ्रा — सूँघना।
    लड़की ने एक फूल सूँघा। — कन्या पुष्पम् अजिघ्रत्।

13. पठ् — पढ़ना।
लता रामायण पढ़ती है। — लता रामायणं पठति।

14. गम् — जाना।
मैं कल दिल्ली जाऊँगी। — अहं श्वः इन्द्रप्रस्थं गमिष्यामि।

15. दृश् — देखना।
तुम चाँद को देखो। — त्वं चन्द्रं पश्य।

16. हस् — हँसना।
तुम व्यर्थ क्यों हँसते हो। — त्वं व्यर्थं किमर्थं हससि ?

17. पच् — पकाना।
मेघा भोजन पकाती है। — मेघा भोजनं पचति।

18. भ्रम् — घूमना।
पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। — पृथिवी सूर्यं परितः भ्रमति।

19. नम् — नमस्कार करना।
वह गुरु को नमस्कार करता है। — सः गुरुं नमति।

20. हस् — हँसना।
अंधे को देखकर बच्चे हँस पड़े। — अन्धं दृष्ट्वा बालाः अहसन्।

21. धाव् — दौड़ना।
सोनू दौड़ता है। — सोनू धावति।

22. पठ् — पढ़ना।
सोमलेखा पढ़ती है। — सोमलेखा पठति।

23. गर्ज — गर्जना।
सिंह गरजते हैं। — सिंहाः गर्जन्ति।

24. प्रनम् — नमस्कार करना।
शिष्य गुरु को प्रणाम करता है। — शिष्यः गुरुं प्रणामति।

25. आगम् — आना।
बच्चे स्कूल से आते हैं। — बालकाः विद्यालयात् आगच्छन्ति।

26. उपविश् — बैठना।
बंदर वृक्ष पर बैठते हैं। — वानराः वृक्षे उपविशन्ति।

27. रक्ष् — रक्षा करना।
भगवान् हमारी रक्षा करता है। — ईश्वरः अस्मान् रक्षति।

28. जीव् — जीवित रहना।
प्राणी वायु से जीवित रहते हैं। — प्राणिनः वायुना जीवन्ति।

29. वय् — बोना।
किसान धान बोता है। — कृषकः धान्यं वपति।

30. पत् — गिरना।
वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। — वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

31. भ्रम् — घूमना।
जंगल मे पशु घूमते हैं। — वने पशवः भ्रमन्ति।

32. अधिगम् — प्राप्त करना।
वह धन प्राप्त करता है। — सः धनम् अधिगच्छति।

33. पनी — विवाह करना।
अर्जुन ने द्रौपदी से विवाह किया। — अर्जुनः द्रौपदीं प्राणयत्।

34. अस् — होना।
जंगल मे सात हाथी है। — वने सप्त गजाः सन्ति।

35. नम् — नमस्कार करना।
शिष्य गुरु को नमस्कार करता है। — शिष्यः गुरुं नमति।

36. दृश् — देखना।
बालक चित्र देखता है। — बालकः चित्रं पश्यति।

37. अनुभू — अनुभव होना।
परिश्रमी सुख को अनुभव करता है। — परिश्रमी सुखम् अनुभवति।

38. अस् — होना।
तुम्हारा कल्याण हो। — तव कल्याणम् अस्तु।

39. नश् — नष्ट होना।
कंस बुरे कर्मों के कारण नष्ट हुआ। — कंसः दुष्टाचारेण अनश्यत्।

40. स्था — ठहरना।
यहाँ रूपाल रहती है। — अत्र रूपाल तिष्ठति।

41. उपगम् — पास जाना।
शिष्य गुरु के पास जाता है। — शिष्यः गुरुम् उपगच्छति।

42. चल् — चलना।
चन्द्रलेखा धीरे-धीरे चलती है। — चन्द्रलेखा शनैः-शनैः चलति।

43. हँस् — हँसना।
मनोज हँसता है। — मनोजः हसति।

44. अर्ज् — नमस्कार करना।
शिष्य गुरु को नमस्कार करता है। — शिष्यः गुरुं अर्जति।

45. विचर् — विचरण करना।
जंगल में पशु घूम रहे है। — वने पशवः विचरन्ति।

46. भू — होना।
साँझ को अंधेरा हो जाता है। — सायं तमः भवति।

47. आगम् — आना।

वह गाँव से आता है। — सः ग्रामात् आगच्छति।

48. आनी — लाना।

वह जल लाता है। — सः जलम् आनयति।

49. लिख् — लिखना।

मैं मित्र को पत्र लिखता हूँ। — अहं मित्रं पत्रं लिखामि।

50. चुर् — चुराना।

सोहन मित्र का धन चुराता है। — सोहनः मित्रस्य धनं चोरयति।

51. चर् — चलाना।

तुम धूप में क्यों घूम रहे हो। — त्वम् आतपे किमर्थं विचरसि ?

52. उदस्थ — उठना।

मैं सुबह उठता हूँ। — अहं प्रातः उत्तिष्ठामि।

53. नी — ले जाना।

वह गाय को ले जाता है। — सः गां नयति।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. यथानिर्दिष्ट रूप लिखिए—

पठ्	—	लट्	________
लिख्	—	लट्	________
पा	—	लोट्	________
दृश	—	लङ्	________
स्था	—	लट्	________
गम्	—	लट्	________
चिन्त्	—	लट्	________
पत्	—	लोट्	________

2. निम्नलिखित को शुद्ध करके लिखिए—

अस्थात् ________

पिबस्यति ________

चोरति ________

दृश्यतु ________

मेलामि ________

लेखति ________

पश्यिष्यति ________

त्यजिष्यामि ________

चिन्तति ________

अस्ति ________

3. निम्नलिखित का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) मेरे पिता दिल्ली में रहते हैं। ________

(ख) बच्चे ने बगीचे में सर्प को देखा। ________

(ग) बच्चा गाड़ी के साथ दौड़ता है। ________

(घ) राम ने गीत गाया। ________

(ङ) हाथी जल पीते हैं। ________

(च) सिंह ने हिरण को मार डाला। ________

(छ) दशरथ के चार पुत्र थे। ________

(ज) सीता राम के साथ वन में गई। ________

(झ) मैं खेल के मैदान में खेलता हूँ। ________

7 कारक तथा उपपद विभक्ति
Case and Case Signs

कारक (Cases)

जिन शब्दों का क्रिया से सीधा सम्बन्ध हो और क्रिया के करने में सहायक हो, उसे कारक कहते हैं। जैसे हे छात्रा: दशरथस्यै पुत्र: राम: सीतायै लङ्कायां रावणं बाणेन हतवान्। अर्थात् हे छात्रो! दशरथ के पुत्र राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा। इस वाक्य में हतवान्- क्रिया है। इसके करने में ये शब्द सीधे संबंधित हैं—

1. राम	—	कर्ता	2. रावण	—	कर्म
3. बाणेन	—	करण	4. सीतायै	—	सम्प्रदान
5. लङ्कायाम्	—	अधिकरण से सभी कारक हैं।			

1. कर्ता — क्रिया को करने वाला।
2. कर्म — क्रिया करने में कर्ता का अभीष्टम्।
3. करण — क्रिया करने में क्रिया का प्रमुख सहायक।
4. सम्प्रदान — जिसके लिए क्रिया की जाती है।
5. अपादान — क्रिया के होने में जिससे कोई वस्तु अलग हो।
6. अधिकरण — क्रिया के होने में जो आधार स्थल होता है।

इन छः कारकों के अतिरिक्त हिन्दी भाषा में सम्बन्ध और सम्बोधन दो कारक होते हैं—

सम्बन्ध— जिससे एक शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध प्रकट हो।

सम्बोधन— जिससे सम्बोधित किया जाए अथवा पुकारा जाए।

इन दोनों का क्रिया से सीधा सम्बन्ध न होने के कारण इन्हें संस्कृत व्याकरण में कारक नहीं माना जाता है।

जो क्रिया की सिद्धि में सहायक हो, उसे कारक कहते हैं। संस्कृत में छः कारक हैं।

विभक्ति (Case Sign)

विभिन्न कारकों का अर्थ प्रकट करने के लिए क्रिया का आधार बनाकर जो प्रत्यय संज्ञा आदि शब्दों में लगते हैं, वे कारक विभक्ति कहलाते हैं। ये विभक्तियाँ सात प्रकार की हैं—

1. प्रथमा	2. द्वितीया	3. तृतीया	4. चतुर्थी
5. पंचमी	6. षष्ठी	7. सप्तमी।	

यह विशेष विभक्ति ही उपपद विभक्ति कहलाती है। यहाँ कुछ उपपद विभक्तियों का परिचय कराया जा रहा है—

1. अभित:, परित: तथा उभयत के योग में द्वितीया विभक्ति होती हैं—

(क) नगर के दोनों ओर जल है।	नगरम् उभयत: जलं अस्ति।
(ख) राजमार्ग के दोनों ओर वृक्ष हैं।	राजमार्गम् उभयत: वृक्षा: सन्ति।
(ग) गाँव के दोनों ओर वृक्ष हैं।	ग्रामम् उभयत: वृक्षा: वर्तन्ते।
(घ) गाँव के सामने वृक्ष हैं।	ग्रामम् उभित: वृक्षा वर्तन्ते।

2. समया व निकषा के योग में द्वितीया विभक्ति होती है—

(क) गाँव के निकट नदी है।	ग्रामं निकषा नदी वर्तते।
(ख) घर के निकट वृक्ष है।	गृहं समया वृक्षा: सन्ति।
(ग) गाँव के निकट जल है।	ग्रामं समया जलं अस्ति।

3. सह के योग में तृतीया विभक्ति होती है

(क) लक्ष्मण राम के साथ वन को जाता है।	लक्ष्मण रामेण सह वनं गच्छति।
(ख) सीता राम के साथ जाती है।	सीता रामेण सह गच्छन्ति।

4. जिस अंग में कोई विकार हो उसमें तृतीया विभक्ति होती है।

(क) वह आँखों से अंधा है।	स: नेत्राभ्याम् अन्ध: अस्ति।

5. नम: तथा स्वास्ती शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है—

(क) देवताओं को नमस्कार।	देवाय: नम:।
(ख) प्रजा का कल्याण हो।	प्रजाभ्य: नम:।

6. क्रोधवाची धातु के योग में चतुर्थी होती है—

(क) वह रावण पर क्रोध करता है।	स: रावणाय क्रुधयति।
(ख) राम देव पर क्रोध करता है।	राम: देवाय क्रुधयति।

7. 'रक्षा' करना के योग में पञ्चमी होती है—

(क) वह बच्चे को भालू से बचाता है।	स: बालकं भल्लकात रक्षति।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित की परिभाषा लिखिए—

कारक _____

_____

विभक्ति _____

_____

उपपद विभक्ति _____

2 निम्नलिखित के दो-दो उदाहरण दीजिए—

अधिकरण कारक _____ _____

सम्प्रदान कारक _____ _____

कर्म कारक _____ _____

करण कारक _____ _____

अपादान कारक _____ _____

3 निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग वाक्य में कीजिए—

नमः _____

प्रभवति _____

स्मरति _____

स्वामि _____

उभयतः _____

4 निम्नलिखित को शुद्ध कीजिए—

(क) ईश्वरं नमः। _____

(ख) वृद्धं नगरेण आयति। _____

(ग) गङ्गा हिमालयेन प्रभवति। _____

(घ) देव सर्पेण बिभेति। _____

(ङ) नृपः ब्राह्मणं जां ददाति। _____

(च) माता पुत्रं स्निह्यति। _____

(छ) सः रामं स्मरति। _____

(ज) रामः कर्णयोः बधिरः अस्ति। _____

5 उचित पद लेकर रिक्त स्थान भरिए— (बाण)

(क) रामः रावणं _____ अमारयत्। (गृह)

(ख) _____ परितः जलम् अस्ति। (पुत्र)

(ग) पिता _____ स्निह्यति। (चोर)

(घ) राजा _____ क्रुध्यति। (मार्जार)

(ङ) शिशुः _____ बिभेति। (देव)

(च) _____ सह तस्य मित्रं गच्छति।

8 अव्यय (Indeclinable)

संस्कृत व्याकरण का एक नियम है कि किसी भी शब्द में विभक्ति या प्रत्यय जोड़े बिना उसका भाषा में प्रयोग नहीं कर सकते। शब्दों के साथ कारक बोधक विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा रामस्य इत्यादि। धातु के साथ काल बोधक प्रत्यय होता है। यथा ति, तः, अन्ति। संस्कृत भाषा के कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनके साथ कुछ नहीं जुड़ता है। अथवा उनके रूप नहीं चलते हैं, उन्हें अव्यय कहा जाता है। कुछ प्रमुख अव्ययों का अर्थ व प्रयोग नीचे दिया गया है।

1. प्रातः (सुबह)

प्रातः अहम् भ्रमणाय गच्छामि।	सुबह मैं घूमने के लिए जाता हूँ।

2. सायम् (शाम)

वृद्धः सायं भ्रमणाय गच्छति।	बूढ़ा शाम को घूमने जाता है।

3. अधुना (अब)

अधुना गृहम गच्छन्तु।	अब आप घर जाएँ।

4. अत्र (यहाँ)

अत्र त्वं विष्ट।	यहाँ तुम ठहरो।

5. तत्र (वहाँ)

अहं तत्र गच्छामि।	मैं वहाँ जाता हूँ।

6. कुत्र (कहाँ)

त्वम् कुत्र गच्छसि।	तुम कहाँ जाते हो ?

7. च (और)

रामः देवः च गच्छतः।	राम और देव जाते है।

8. अद्य (आज)

रामः अद्यः आगतः।	राम आज आया है।

9. श्वः (आने वाला कल)

श्वः अहं जयपुरं गमिष्यामि।	कल मैं जयपुर जाऊँगा।

10. ह्यः (बीता कल)

ह्यः मम मातुलः जयपुरात् आगतः।	कल मेरे मामाजी जयपुर से आए।

11. अपि (भी)

अहम् अपि तत्र गमिष्यामि। — मैं भी वहाँ जाऊँगा।

12. न (नही)

अलका मूर्खा नास्ति। — अलका मूर्ख नहीं है।

13. शनैः (धीरे-धीरे)

पंगु शनैः शनैः चलति। — लंगड़ा धीरे-धीरे चलता है।

14. अहर्निशम् (दिनरात)

पृथिवी अहर्निश भ्रमति। — पृथ्वी दिन-रात घूमती है।

15. एवम् (इस प्रकार)

सः एवम् कथयति। — वह इस प्रकार कहती है।

16. कुतः (कहाँ से)

कुतः आगतः भवान्। — आप कहाँ से आएँ हो ?

17. सर्वत्र (सब जगह)

ईश्वरः सर्वत्र अस्ति — ईश्वर सब जगह है।

18. वा (या)

रामो वा श्यामो वा तत्र गच्छतु। — राम या श्याम वहाँ जाएँ।

19. अथवा (अथवा)

देवो: अथवा कृष्णः पाठं पठेत। — देव या कृष्ण पाठ पढें।

20. अन्यत्र (और कहीं)

मम पुस्तकं अन्यत्र अस्ति। — मेरी पुस्तक कहीं ओर है।

21. सर्वदा (सदा)

सर्वदा सत्यं वद। — सदा सत्य बोलो।

22. यदा (जब)

यदा सूर्य उदेति। — जब सूर्य निकलता है।

23. तदा (तब)

तदा कमलानि विकसत। — तब कमल खिलते हैं।

24. सदा (सदा)

सदा सत्यं वद। — सदा सत्य बोलो।

25. एकदा (एक बार)

एकदा वने सिंह आसीत्। — एक बार वन में शेर था।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए

(क) अपि

(ख) प्रातः

(ग) अहर्निशम्

(घ) श्वः

(ङ) शनैः

(च) शीघ्रम्

(छ) एकदा

(ज) अत्र

(झ) न

(ञ) च

2. कोष्ठक में से उचित अव्ययपद लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

अत्र, श्वः, शनैः, शीघ्रम्, तत्र, कदा

(क) त्वम् _____ आगतः।

(ख) _____ चलातु भवान्।

(ग) _____ मम पिता आगमिष्यति।

(घ) _____ एकः तापसः वसति।

(ङ) त्वम् केन कारणेन _____ चलसि ?

(च) _____ उपविशतु भवान्।

9

समास
Compound

संक्षेप करने को समास कहते हैं। जब दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त करके, तथा उनके साथ जुड़े हुए कारक बोधक चिह्न को समाप्त करके एक शब्द का निर्माण किया जाता है, उसे समास कहते हैं। उदाहरण— 'रामस्य पुत्रः' यहाँ 'राम' तथा 'पुत्र' ये दो शब्द हैं जिनके बीच में कारक चिह्न 'स्य' विद्यमान है। इन शब्दों का समास करते समय 'स्य' विभक्ति को समाप्त कर दिया जाता है तथा 'राम' व 'पुत्र' इन दोनों शब्दों के मेल से 'रामपुत्र' शब्द बनता है। इस नवनिर्मित शब्द को समस्तपद कहते हैं।

जब समस्तपद के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए इसके घटक पदों के साथ विभक्तियाँ जोड़ दी जाती हैं तो उसे समास का विग्रह कहते हैं।

संस्कृत में समास चार होते हैं

(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) द्वन्द्व (घ) बहुव्रीहि।

संक्षेप करने को समास कहते हैं।

दो या अधिक शब्दों में समास होने पर एक समस्तपद बनता है।

समस्तपद को उसके घटक पदों में परिवर्तित करना विग्रह कहलाता है।

संस्कृत में समास चार हैं।

अव्ययीभाव

इसमें पहला पद अव्यय तथा दूसरा पद कोई संज्ञा शब्द होता है। विग्रह करते समय अव्यय लुप्त हो जाता है तथा उसका अर्थ मात्र ही शेष रहता है जैसे—

अधिहरि	—	हरौ इति	उपकृष्णम्	—	कृष्णस्य समीपम्।
प्रतिदिनं	—	दिनं दिनं प्रति।	यथाशक्ति	—	शक्तिम् अनतिक्रम्य।
निर्विघ्नम्	—	विघ्नानाम् अभावः।			

अव्ययीभाव समास का पहला पद कोई अव्यय होता है।

तत्पुरुष

इसका उत्तर पद प्रधान होता है। इसके निम्नलिखित भेद हैं—

1. **सामान्य तत्पुरुष**

पहले पद में प्रथमा विभक्ति को छोड़कर अन्य विभक्ति होती है।

दूसरे पद में प्रथमा होती है। यथा—

चौरभयम्	—	चौरात् भयम्।	राजपुरुष	—	राज्ञः पुरुषः।

देवपूजा	—	देवस्य पूजा।	युद्धनिपुण:	—	युद्धे निपुण:।
कार्यचतुर:	—	कार्ये चतुर:।	जलमग्न:	—	जले मग्न:।
आतपशुष्क:	—	आतपे शुष्क:।	सभा पंडित:	—	सभायां पण्डित:।
तैलपक्व:	—	तैले पक्व:।	शरणप्राप्त:	—	शरणं प्राप्त:।
शरणागत:	—	शरणम् आगत:।	अग्निदग्ध	—	अग्निना दग्ध:।
सुख युक्त:	—	सुखेन युक्त:।	भूतबलि:	—	भूतेभ्य: बलि:।
विद्याहीन:	—	विद्यया हीन:।			

2. कर्मधारय तत्पुरुष

(i) इसमें विशेषण व विशेष्य का समास होता है—

कृष्णसर्प:	—	कृष्ण: सर्प:।	नीलोत्पलम्	—	नीलम् उत्पलम्।

(ii) इसमें उपमान व उपमेय का समास होता है—

घनश्याम:	—	घन इव श्याम:।	कमलमुखम्	—	कमलम् इव मुखम्।

3. द्विगु तत्पुरुष

पञ्चतंत्रम्	—	पञ्चानां तंत्राणां समाहार:।	पञ्चरात्रम्	—	पञ्चानां रात्रीणां समाहार:।
शताब्दि	—	शतस्य अब्दानां समाहार:।	पञ्चवटी	—	पञ्चानां वटानां समाहार:।
त्रिफलाम्	—	त्रयाणां फलानां समाहार:।	त्रिलोकी	—	त्रयाणां लोकानां समाहार:।
त्रिभुवनम्	—	त्रयाणां भुवनानां समाहार:।	पञ्चगवम्	—	पञ्चानां गवां समाहार:।

4. नञ् तत्पुरुष

इसमें 'न' के साथ शब्द का समास होता है। समास बनाते समय इस 'न' के स्थान पर 'अ' शेष रह जाता है। यथा—

न पण्डित:	—	अपण्डित:	न ज्ञानम्	—	अज्ञानम्।
न ब्राह्मण:	—	अब्राह्मण:	न सुखम्	—	असुखम्।

यदि दूसरे पद के आरंभ में कोई स्वर हो तो 'न' के स्थान पर 'अन्' हो जाता है। यथा—

न उचितम्	—	अन्	उचितम्	—	अनुचितम्।
न आदरम्	—	अन्	आदरम्	—	अनादरम्।

तत्पुरुष का उत्तरपद प्रधान होता है।

कर्मधारय में उपमान उपमेय अथवा विशेषण विशेष्य का समास होता है।

द्विगु के पूर्व पद में संख्यावाची शब्द होता है।

'नञ्' अव्यय के साथ होने वाला समास नञ् तत्पुरुष कहलाता है।

(ग) द्वन्द्व

इसके दोनों पद प्रधान होते हैं। इसमें 'च' पद के द्वारा शब्दों को विगृहीत किया जाता है। यथा—

धर्मार्थौ	—	धर्मः च अर्थः च।	कन्दमूलफलानि	—	कन्दं च मूलं च फलं च।
भीमार्जुनौ	—	भीमः च अर्जुनः च।	हरिहरौ	—	हरिः च हरः च।
रामकृष्णौ	—	रामः च कृष्णः च।	रामकृष्णमोहनाः	—	रामः च कृष्णः च मोहनः च।
माता पितरौ	—	माता च पिता च।	पितरौ	—	माता च पिता च।

द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं।

(घ) बहुव्रीहि

इसमें कोई भी पद प्रधान नहीं होता है।

बहुव्रीहि, शब्द विशेषण होता है—

चतुर्मुखः	—	चत्वारि मुखानि यस्य सः।	कण्ठेकालः	—	कण्ठे कालः यस्य सः।
पीताम्बरः	—	पीतानि अम्बराणि यस्य सः।	महाशयः	—	महान् आशयः यस्य सः।
जितेन्द्रियः	—	जितानि इन्द्रियाणि येन सः।	दशाननः	—	दश आननानि यस्य सः।

बहुव्रीहि समास में अन्य पद प्रधान होता है।

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित की परिभाषा लिखिए—

समास _____

_____

समस्तपद _____

_____

विग्रह _____

_____

2. प्रत्येक के दो-दो उदाहरण लिखिए—

द्विगु समास _____ _____

द्वन्द्व समास _____ _____

नञ् समास _____ _____

3. निम्नलिखित का विग्रह कीजिए—

उपवनम् _____ उपगङ्गम् _____

उपगुरुम् _____ अनुपस्थित _____

अनेक: _____ अनुपकार: _____

चतुष्पथम् _____ राम-श्यामौ _____

4. निम्नलिखित में समास कीजिए—

(क) कृष्णे इति _____ (ख) बलम् अनतिक्रस्य _____

(ग) जलस्य अभाव: _____ (घ) फलानां समृद्धि: _____

(ङ) क्षणं क्षणं प्रति _____ (च) इच्छाम् अनतिक्रम्य _____

(छ) यमुनाया: समीपम् _____ (ज) रामस्य पिता _____

(झ) सिंहात् भयम् _____ (ञ) असिना छिन्न: _____

(ट) कार्ये कुशल: _____ (ठ) न देव: _____

(ड) न सुर: _____ (ढ) न अन्त: _____

(ण) न न्याय: _____ (त) कृष्णं वस्त्रम् _____

(थ) नीलम् अम्बरम् _____ (द) श्वेतं पत्रम् _____

(ध) कृष्णा अजा _____ (न) देव: च असुर: च _____

(प) सुर: च असुर: च _____ (फ) जित: संग्राम: येन स। _____

10 कृत् प्रत्यय
Primary Suffixes

कृत् प्रत्यय

किसी भी शब्द या धातु के साथ जुड़ने वाले अक्षर समूह को प्रत्यय कहते हैं। जो प्रत्यय धातु से जुड़ते हैं वे या तो 'कृत्' प्रत्यय होते हैं या लकार बोधक प्रत्यय होते हैं। जैसे— तव्य, ति, सि इत्यादि।

कृदन्त— जो प्रत्यय क्रिया के अंत में जुड़कर एक नया अर्थ प्रदान करते हैं, वे कृदन्त प्रत्यय कहलाते हैं। कुछ प्रमुख कृत् प्रत्यय इस प्रकार हैं—

किसी शब्द या धातु के साथ जुड़ने वाले शब्द को 'प्रत्यय' कहते हैं।

प्रत्यय दो प्रकार के हैं— कृत्, तद्धित।

धातु के साथ जुड़ने वाले प्रत्यय को 'कृत्' कहा जाता है।

तव्य, अनीयर्

इन दोनों प्रत्ययों का शुद्ध रूप क्रमशः 'तव्य' तथा 'अनीय' है। इन प्रत्ययों का 'चाहिए' अर्थ में प्रयोग होता है। धातु के साथ जोड़ते समय निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं।

1. जिस धातु के अन्त में इ, उ तथा ऋ होता है तो इसके स्थान पर क्रमशः ए, ओ तथा अर् हो जाता है। यथा—

नी	+	तव्यत्	=	नेतव्य।	स्तु	+	तव्यत्	=	स्तोतव्य।
कृ	+	तव्यत्	=	कर्तव्य।	भी	+	तव्यत्	=	भेतव्य।

2. कुछ धातुओं में (उपर्युक्त परिवर्तन होने के बाद) तव्यत् प्रत्यय से पहले 'इ' भी जुड़ता है।

भू	+	तव्यत्	=	भो।	इ	+	तव्यत्	=	भवितव्य।

3. जिन धातुओं के अंत में व्यञ्जन होता है, उन धातुओं के अंतिम वर्ण से पहले आने वाले इ, उ, ऋ के स्थान पर भी क्रमशः ए, ओ तथा अर् हो जाता है। यथा—

वृध	+	तव्यत्	=	वर्ध् ई	तव्य	=	वर्धितव्य।
भिद्	+	तव्यत्	=	भेद्	तव्यत्	=	भेत्तव्य।

4. धातु के अंत में आने वाले च्, ज्, ह् के स्थान पर क्रमशः क्, क् तथा ध् हो जाता है। जैसे—

दह्	+	तव्यत्	=	दग्धव्य।	ज्यज्	+	तव्यत्	=	ज्यक्तव्य।
पच्	+	तव्यत्	=	पक्तव्य।					

'चाहिए' अर्थ कहने के लिए 'तव्य' तथा 'अनीयर्' प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

'अनीयर्' का 'अनीय' शेष रहता है।

क्त, क्तवतु, क्त्वा

इन प्रत्यायों का शुद्ध रूप क्रमश: त, तवत् तथा त्वा है। क्त तथा क्तवतु का प्रयोग भूतकाल में होता है। जहाँ वाक्य में दो क्रियाएँ क्रमश: होती हैं, वहाँ उन दोनों में जो पहले समाप्त होती है, उसे बनाने के लिए 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

1. क्त, क्तवतु तथा क्त्वा प्रत्ययों को जोड़ने से पहले धातु के साथ कई बार 'इ' जोड़ दी जाती है।

पठ्	+	क्त	—	पठ् इ त	—	पठित।
पठ्	+	क्तवतु	—	पठ् इ तवत्	—	पठितवत्।
पठ्	+	क्त्वा	—	पठ् इ त्वा	—	पठित्वा।

2. धातु के अंत में आने वाले 'न्' या 'म्' को समाप्त कर दिया जाता है।

हन्	+	क्त	—	हत। इसी प्रकार 'हत्वा' तथा 'हतवत्'।
गम्	+	क्त	—	गत। इसी प्रकार गत्वा तथा गतवत्।

3. धातु के अन्त में आने वाले च्, ज्, श् तथा ह् के स्थान पर क्रमश: क् , क्, ष् तथा ढ् हो जाते हैं।

त्यज	+	क्त	—	त्यक्त।		
सह्	+	क्त	—	सोढ् त	—	सोढ। सोढ्वा। सोढवत्।

4. जब धातु से पहले कोई उपसर्ग हो तो 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' = य प्रत्यय जुड़ता है।

सम्	+	भू	—	सम्	+	भू	+	य	—	सम्भूय।
आ	+	नी	—	आ	+	नी	+	य	—	आनीय।
अनु	+	क्त्वा	—	अनु	+	भू	+	य	—	अनुभूय।

पूर्वकालिक क्रिया के लिए 'क्त्वा' प्रत्यय होता है। क्त्वा का 'त्वा' शेष रहता है।

भूतकाल के अर्थ में क्त, क्तवतु का प्रयोग होता है। क्त का 'त' तथा क्तवतु का 'तवत्' शेष रहता है।

तुमुन्

इस प्रत्यय का शुद्ध रूप 'तुम्' होता है। 'के लिए' इस अर्थ में इस प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। 'तव्यत्' प्रत्यय जोड़ते समय धातु में जो परिवर्तन होते हैं, वे सभी परिवर्तन 'तुमुन्' प्रत्यय के साथ घटित होते हैं।

स्तु	+	तुमुन्	—	स्तोतुम्।		दह्	+	तुमुन्	—	दग्धुम्।
कृ	+	तुमुन्	—	कर्तुम्।		छिद्	+	तुमुन्	—	छेत्तुम्।
नी	+	तुमुन्	—	नेतुम्।		पच्	+	तुमुन्	—	पक्तुम।
श्रु	+	तुमुन्	—	श्रोतुम्।		भिद्	+	तुमुन्	—	भेत्तुम।

'के लिए' अर्थ में 'तुमुन्' का प्रयोग होता है। तुमुन् का 'तुम्' शेष रहता है।

शतृ

यह प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं के साथ जुड़ता है।

नियम— जिस धातु के साथ 'शतृ' प्रत्यय जोड़ना हो उस धातु का लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप याद कर लें। जैसे— गम्-गच्छन्ति। अब इस रूप के अन्तिम स्वर को हटा देना चाहिए जैसे— गच्छन्ति = गच्छन्त्। अब यदि अन्तिम अक्षर से पहले 'न' हो तो उस 'न्' को भी हटा देना चाहिए। ध्यान रखना चाहिए कि 'इ' को हटा देने के बाद अन्तिम और 'तू' के साथ दूसरा व्यंजन हो तो उसे हटा देना चाहिए तथा केवल 'तू' को शेष रखना चाहिए। अब हमारा अभीष्ट रूप तैयार हो गया है।

गम् शतृ — गच्छन्ति-गच्छत्

(क) कृत् बोधक तालिका

धातु	तव्यत्	अनीयर्	तुमुन्	शतृ
जन्	जानितव्य	जननीय	जनितुम्	—
ज्ञा	ज्ञातव्य	ज्ञानीय	ज्ञातुम्	ज्ञानत्
त्यज्	त्यक्तवय	त्यजनीय	त्यक्तुम्	त्यजत्
दा	दातव्य	दानीय	दातुम्	यच्छत्
दृश्	द्रष्टव्य	र्शनीय	द्रष्टुम्	पश्यत्
धाव्	धावितव्य	धावनीय	धावितुम्	धावत्
नम्	नन्तव्य	नमनीय	नन्तुम्	नमत्
पठ्	पठितव्य	पठनीय	पठितुम्	पठत्
पच्	पक्तव्य	पचनीय	पक्तुम्	पचत्
पा	पातव्य	पानीय	पातुम्	पिबत्
भिद्	भेत्तवय	भेदनीय	भेत्तुम्	भिन्दत्
भू	भवितव्य	भवनीय	भवितुम्	भवत्
यत्	यतितव्य	यतनीय	यतितुम्	—
लभ्	लब्धव्य	लभनीय	लब्धुम्	—
लिख्	लेखितव्य	लेखनीय	लेखितुम्	लिखत्
कृ	कर्त्तव्य	करणीय	कर्तुम्	कुर्वत्
गम्	गन्तव्य	गमनीय	गन्तुम्	गच्छत्
ग्रह्	ग्रहीतव्य	ग्रहणीय	ग्रहीतुम्	गृह्णत्
क्रीड्	क्रीडितव्य	क्रीडनीय	क्रीडितुम्	क्रीडत्
घ्रा	घ्रातव्य	घ्राणीय	घ्रातुम्	जिघ्रत्
छिद्	छेत्तव्य	छेदनीय	छेत्तुम्	जिन्दत्

श्रु	श्रोतव्य	श्रवणीय	श्रोतुम्	शृण्वत्
सह्	सोढव्य	सहनीय	सोढुम्	—
सेव्	सेवितव्य	सेवनीय	सोवितुम्	—
स्था	स्थातव्य	स्थानीय	स्थातुम्	तिष्ठत्
स्मृ	स्मर्तव्य	स्मरणीय	स्मर्तुम्	स्मरत
हस्	हसितव्य	सहनीय	हसितुम्	हसत
वद्	वदितव्य	वदनीय	वदितुम्	वदत्
वच्	वक्तव्य	वचनीय	वक्तुम्	वदत्
वृत्	वर्तितव्य	वर्तनीय	वर्तितुम्	—
वृध्	वर्धितव्य	वर्धनीय	वर्धितुम्	—

(ख) कृत् बाधक तालिका

धातु	क्त	क्तवतु	कत्वा	धातु	क्त	क्तवतु	कत्वा
स्मृ.	स्मृत	स्मृतवत्	स्मृत्वा	गम्	गत	गतवत्	गत्वा
हन्	हत	हतवत्	हत्वा	पच्	पक्व	पक्ववत्	पक्त्वा
चल्	चलित	चलितवत्	चलित्वा	चर्	चरित	चरितवत्	चरित्वा
स्ना	स्नात	स्नातवत्	स्नात्वा	भिद्	भिन्न	भन्निवत्	भित्त्वा
दा	दत्त	दत्तवत्	दत्वा	वस्	उषित	उषितवत्	उषित्वा
नम्	नत	नतवत्	नत्वा	अर्च्	अर्चित	अर्चितवत्	अर्चित्वा
अर्ज्	अर्जित	अजितवत्	अर्जित्वा	वच्	उक्त	उक्तवत्	उक्त्वा
मुच्	मुक्त	मुक्तवत्	मुक्त्वा	रुद्	रुदित	रुदितवत्	रुदित्वा
आप्	आप्त	आप्तवत्	आप्त्वा	जप्	जप्त	जप्तवत्	जप्त्वा
चुर्	चोरत	चोरितवत्	चोरयित्वा	कृ	कृत	कृतवत्	कृत्वा
हृ	हृत	हृतवत्	हृत्वा	मृ	मृत	मृतवत्	मृत्वा
क्रीड्	क्रीडित	क्रीडितवत्	क्रीडित्वा	गम्	गत	गतवत्	गत्वा
घ्रा	घ्रात	घ्रातवत्	घ्रात्वा	छिद्	छिन्न	छिन्नवत्	छित्त्वा
त्यज्	त्यक्त	त्यक्तवत्	त्यक्त्वा	दृश्	दृष्ट	दृष्टवत्	दृष्टवा
पठ्	पठित	पठितवत्	पठित्वा	पा	पीत	पीतवत्	पीत्वा
भू	भूत	भूवत्	भूत्वा	लिख्	लिखित	लिखितवत्	लिखित्वा
सह	सोढ	सोढ्वा	सोढ्वा	स्था	स्थित	स्थितवत्	स्थित्वा
भृ	भृत	भृतवत्	भृत्वा				

अभ्यास कार्य (EXERCISE)

1. निम्नलिखित की परिभाषा लिखिए—

प्रत्यय _____

कृत _____

2. प्रत्येक के दो-दो उदाहरण लिखिए—

तव्यत् _____ _____

अनीयर् _____ _____

क्त्वा _____ _____

3. धातु में प्रत्यय जोड़कर शब्द लिखिए—

(क) गम् + क्त्वा _____

(ग) हन् + क्त _____

(ङ) पच् + तव्यत् _____

(छ) कृ + अनीयर् _____

(झ) भू + तुमुन् _____

(ख) दृश् + क्तवतु _____

(घ) पठ् + शतृ _____

(च) स्मृ + तव्यत् _____

(ज) छिद् + तुमुन् _____

(ञ) पत् + क्त्वा _____

4. निम्नलिखित में प्रकृति प्रत्यय लिखिए—

(क) कृत्वा _____

(ग) द्रष्टुम् _____

(ङ) चलितः _____

(छ) सोढ्वा _____

(झ) क्रीडित _____

(ख) पठितुम् _____

(घ) पक्ववत् _____

(च) स्मरत् _____

(ज) घ्रात्वा _____

(ञ) नतवत् _____

11 अनुवाद
Translation

संस्कृत मे पुरुष व वचन के आधार पर शब्दो मे परिवर्तन होता है। इस प्रकार कर्तृपद नौ प्रकार के होते है—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः	तौ	ते
मध्यम पुरुष	त्वम्	युवाम्	यूयम्
उत्तम पुरुष	अहम्	आवाम्	वयम्

संस्कृत में धातु में पुरुष व वचन के अनुसार परिवर्तन होता है। इस प्रकार क्रियापद भी नौ प्रकार के होते है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

1. अनुवाद करने के लिए कर्त्ता व क्रिया की समानता आवश्यक होती है—

कर्त्ता		क्रिया	कर्त्ता		क्रिया
सः	(प्रथम पुरुष एकवचन)	पठति।	तौ	(प्रथम पुरुष द्विवचन)	पठतः।
ते	(प्रथम पुरुष बहुवचन)	पठन्ति।	त्वम्	(मध्यम पुरुष एकवचन)	पठसि।
युवाम्	(मध्यम पुरुष द्विवचन)	पठथः।	यूयम्	(मध्यम पुरुष बहुवचन)	पठथ।
अहम्	(उत्तम पुरुष एकवचन)	पठामि।	आवाम्	(उत्तम पुरुष द्विवचन)	पठावः।
वयम्	(उत्तम पुरुष बहुवचन)	पठामः।			

2. लिंग के आधार पर क्रिया पद में कोई परिवर्तन नहीं होता है—

मैं जाता हूँ।			तू देखता है।		
अहं गच्छामि।			त्वं पश्यसि।		
मैं जाती हूँ।			तू देखती है।		
देव पढ़ता है।	—	देवः पठति।	लता पढ़ती है।	—	लता पठति।

कारक के अनुसार संज्ञा शब्दों में विभक्ति का प्रयोग होता है—

मैंने	—	अहम् -कर्ता (प्रथमा)	लाठी से	—	लगुडेन -करण (तृतीया)
साँप को	—	सर्पम् कर्म (द्वितीया)	मैदान में	—	क्षेत्रे -अधिकरण (सप्तमी)
मारता हूँ	—	हन्मि (क्रिया)			

काल के अनुसार लकार का प्रयोग होता है—

(क) बच्चा दौड़ता है।	बाल: धावति।
(ख) मैंने दूध पिया।	अहं दुग्धम् अपिबम् ।
(ग) तुम चित्र देखोगे।	त्वं चित्रं द्रक्ष्यसि।
(घ) वह पाठ पढ़े।	स: पाठं पठेत्।

सामान्य प्रयोग

1. यह मेरी कुर्सी है।	इयं मम आसन्दी अस्ति।
2. द्रौपदी अर्जुन की पत्नी थी।	द्रौपदी अर्जुनस्य पत्नी आसीत्।
3. श्री राम दशरथ के पुत्र थे।	श्री राम: दशरथस्य पुत्र: आसीत्।
4. यह एक कोयल है।	अयम् एक: पिक: अस्ति।
5. यह मेरा लड़का है।	अयं मम पुत्र: अस्ति।
6. यह एक लड़की है।	एषा एका कन्या अस्ति।
7. यह एक छात्रा है।	एषा एका छात्रा अस्ति।
8. यह एक मेज है।	अयम् एक: फलक: अस्ति।
9. ये तीन कबूतर हैं।	एते त्रय: कपोता: सन्ति।
10. यह मेरा मकान है।	इदं मम भवनम् अस्ति।

प्रथम पुरुष (First Person)

1. सोहन रोता है।	सोहन: रोदिति।
2. स्त्रियाँ गीत गाती हैं।	स्त्रिय: गीतं गायन्ति।
3. दो बच्चे आते हैं।	द्वौ बालकौ आगच्छत:।
4. दो फल गिरते हैं।	फले पतत:।
5. पत्ते वृक्ष से गिरते हैं।	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
6. वे वेद पढ़ते हैं।	ते वेदान् पठन्ति।
7. वह जाता है।	स: गच्छति।
8. वे हँसते हैं।	ते हसन्ति।
9. दो पक्षी उड़ते हैं।	द्वौ खगौ उत्पतत:।
10. नताशा नाचती है।	नताशा नृत्यति।

मध्यम पुरुष (Second Person)

1.	तुम (दो) गाँव गए।	युवां ग्रामम् अगच्छतम्।
2.	तुम सब दूध पीते हो।	यूयं दुग्धं पिबथ।
3.	क्या तुम सब दूध पीते हो ?	किं यूयं दूग्धं पिबथ ?
4.	तुम दूध नहीं पीओगे।	त्वं दुग्धं न पास्यसि।
5.	तुम नाचते हो।	त्वं नृत्यसि।
6.	तुम हँसते हो।	त्वं हससि।
7.	तुम गाते हो।	त्वं गायसि।
8.	तुम नहीं आए।	त्वं न आगच्छ:।
9.	तुम कहाँ जाते हो?	त्वं कुत्र गच्छसि ?
10.	क्या तुम नहीं पढ़ते हो ?	किं त्वं न पठसि ?

उत्तम पुरुष (Third Person)

1.	मैं भी वहाँ चलूँगा।	अहम् अपि तत्र गमिष्यामि।
2.	मैं पलंग पर सोता हूँ।	अहं पर्यंकम् अधिशये।
3.	हम दोनों प्रदर्शनी देखेंगे।	आवां प्रदर्शनीं द्रक्षयाव:।
4.	हम पढ़ेंगे।	वयं पठिष्याम:।
5.	मैं प्रश्न पूछूँगा।	अहं प्रश्नं प्रक्ष्यामि।
6.	मैं कल दिल्ली जाऊँगा।	अहं श्व: दिल्ली नगरं गमिष्यामि।
7.	हम सब मैदान में खेलते हैं।	वयं सर्वे क्रीडाक्षेत्रे क्रीडाम:।
8.	मैंने पुरस्कार प्राप्त किया।	अहं पुरस्कारम् अलभे।
9.	हम चलचित्र देखते हैं।	वयं चलचित्रं पश्याम:।

लट् लकार (Present Tense)

1.	वे दोनों काम करते हैं।	तौ कार्यं कुरुत:।
2.	वह फल नहीं खाता है।	स: फलानि न भक्षयति।
3.	मैं बाग में खेलता हूँ।	अहम् उद्याने क्रीडामि।
4.	हम दोनों बाजार जाते हैं।	आवाम् आपणं गच्छाव:।
5.	बादल गरजते हैं।	मेघा: गर्जन्ति।
6.	वह कहाँ रहता है ?	स: कुत्र वसति ?
7.	छात्र चित्र देखते हैं।	छात्रा: चित्रं पश्यन्ति।

8.	मोहन खेलता है।	मोहनः क्रीडति।
9.	तू झूठ बोलता है।	त्वम् अनृतं वदसि।
10.	पाचक भोजन पकाता है।	पाचकः भोजनं पचति।

लङ् लकार (Past Tense)

1.	माता ने भोजन पकाया।	माता भोजनम् अपचत्।
2.	हमने फल खाए।	वयं फलानि अभक्षयाम।
3.	बालक भोजन खाते थे।	बालकाः भोजनं अखादन्।
4.	लेखा ने दही खाया।	लेखा दधि अभक्षयत्।
5.	मेधा ने स्कूल में नाच किया।	मेधा पाठशालायाम् अनृत्यत्।
6.	मैंने एक साँप को मार दिया।	अहम् एकं सर्पम् अमारयत्।
7.	वह विद्यालय गया।	सः विद्यालयम् अगच्छत्।
8.	देव ने पुस्तक पढ़ी।	देवः पुस्तकम् अपठत्।
9.	मैं भय से काँपता था।	अहं भयात् कम्पे स्म।
10.	बच्चे ने हाथ-पैर धोए।	बालः हस्तपादं प्राक्षालयत्।

लृट् लकार (Future Tense)

1.	बंदर दौड़ेंगे।	वानराः धाविष्यन्ति।
2.	क्या वे कल आएँगे ?	किं ते श्वः आगमिष्यन्ति ?
3.	कल सोमवार है।	श्वः सोमवारः भविष्यति।
4.	मनोज पत्र लिखेगा।	मनोजः पत्रं लेखिष्यति।
5.	राजा रक्षा करेगा।	नृपः रक्षिष्यति।
6.	मैं फूल को सूँघूँगा।	अहं पुष्पं घ्रास्यामि।
7.	क्या तुम फिल्म देखोगे ?	किं त्वं चलचित्रं द्रक्ष्यसि ?
8.	हम कल चिड़ियाघर जाएँगे।	वयं श्वः जन्तुशालां गमिष्यामः।
9.	मोर वन में नाचेंगे।	मयूराः वने नर्तिष्यन्ति।
10.	कल हमारे विद्यालय में अवकाश होगा।	श्वः अस्माकं विद्यालये अवकाशे भविष्यति।

लोट् लकार (Imperative Mood)

1.	चोरी न करो।	स्तेयं न कुरु।
2.	लालच न करो।	लोभं न कुरु।

3.	वे सब हँसे।	ते हसन्त।
4.	सदा सच बोलो।	सदा सत्यं वद।
5.	ईश्वर तेरी रक्षा करे।	ईश्वर: त्वां रक्षतु।

संख्यावाची शब्द

1.	एक आदमी जाता है।	एक: जन: गच्छति।
2.	पाँच पुस्तकें मेज पर रखी हैं।	पञ्च पुस्तकानि फलके सन्ति।
3.	चार बच्चे खेलते हैं।	चत्वार: बालका: क्रीडन्ति।
4.	तीन बालक खेलते हैं।	त्रय: बालका: क्रीडन्ति।
5.	ये पाँच फल हैं।	एतानि पञ्च फलानि सन्ति।
6.	दो हाथी जल पीते हैं।	द्वौ गजौ जलं पिबत:।
7.	एक लड़की हँसती है।	एका कन्या हसति।
8.	चार स्त्रियाँ गीत गाती हैं।	चतस्र: स्त्रिय: गीतं गायन्ति।
9.	दो फूल खिलते हैं।	द्वे पुष्पे विकसत:।
10.	तीन मोर नाचते हैं।	त्रय: मयूरा: नृत्यन्ति।

कारक व उपपद

1.	कृष्ण जयपुर से आता है।	कृष्ण: जयपुरात् आगच्छति।
2.	तुम्हारा क्या नाम है?	तव नाम किम् ?
3.	मेरे पिता दिल्ली में रहते हैं।	मम पिता दिल्ली नगरे वसति।
4.	तू खेलती है।	त्वं क्रीडसि।
5.	ईश्वर संसार को बनाता है।	ईश्वर: संसारं रचयति।
6.	प्रात: मैं बाग में जाता हूँ।	प्रात: अहम् उपवनं गच्छामि।
7.	हम भोजन पकाते हैं।	वयं भोजनं पचाम:।
8.	रमा माँ के साथ बाजार जाती है।	रमा मात्रा सह आपणं गच्छति।
9.	देव गरीब को अन्न देता है।	देव: निर्धनाय अन्नं यच्छति।
10.	मत हँसो।	अलं हसितेन।
11.	तू कानों से बहरा है।	त्वं कर्णाभ्यां बधिर: असि।
12.	ईश्वर को नमस्कार।	ईश्वराय नम:।
13.	अलमारी में कपड़े हैं।	मञ्जूषायां वस्त्राणि सन्ति।
14.	गंगा का जल पवित्र है।	गंगाया: जलं पवित्रं भवति।

15. झगड़ा मत करो। — अलं विवादेन।
16. साइकिल के साथ कुत्ता दौड़ता है। — द्विचक्रिकया सह श्वा धावति।
17. देव साँप से डरता है। — देवः सर्पात् बिभेति।
18. नगर के बाहर विद्यालय है। — नगरात् बहिः विद्यालयः अस्ति।

विविध

1. देव गाँव जाता है। — देवः ग्रामं गच्छति।
2. हम नगर मे रहते है। — वयं नगरे वसामः।
3. तुम घर से चलते हो। — यूयं गृहात् चलथ।
4. नदियाँ पर्वतो से निकलती है। — नद्यः पर्वतेभ्यः निर्गच्छन्ति।
5. माता पुत्र को देखती थी। — माता पुत्रम् अपश्यत्।
6. आप हमारे भाई है। — भवान् अस्माकं भ्राता अस्ति।
7. देवदत्त कलम से लिखता है। — देवदत्तः कलमेन लिखति।
8. मैंने उसे देखा। — अहं तम् अपश्यतम् ।
9. कल वीरवार है। — श्वः वीरवारः अस्ति।
10. छात्र सत्य बोलेंगे। — छात्राः सत्यं वदिष्यन्ति।
11. तू मंदिर जा। — त्वं मन्दिरं गच्छ।
12. राम ने रावण को मारा। — रामः रावणम् अमारयत्।
13. पशुओं ने जल पिया। — पशवः जलम् अपिबन्।
14. राम और श्याम खेलते है। — रामः श्यामः च क्रीडतः।
15. वृक्ष से बंदर गिर पड़ा। — वृक्षात् वानरः अपतत्।
16. बच्चे को न पीटो। — बालं न ताडय।
17. तू फूल सूँघता है। — त्वं पुष्पं जिघ्रसि।
18. राम सफेद वस्त्र पहनता है। — रामः श्वेतं वस्त्रं धारयति।
19. साँप बिल में रहता है। — सर्पः बिले वसति।
20. भिखारी धूप में खड़ा है। — भिक्षुकः आतपे तिष्ठति।
21. देव की पुस्तक सुंदर है। — देवस्य पुस्तकं सुन्दरम् अस्ति।
22. यहाँ जल का वेग है। — अत्र जलस्य प्रवाहः अस्ति।
23. राम सीता को फल देता है। — रामः सीतायै फलानि यच्छति।
24. गुरु जी को नमस्कार। — गुरवे नमः।

25. हम नाक से सूँघते हैं।	वयं नासिकया जिघ्रामः।
26. देव सदा सच बोलता है।	देवः सदा सत्यं वदति।
27. हाथी चलता है।	गजः चलति।
28. घोड़ा दौड़ता है।	अश्वः धावति।
29. माता को देवता मानो।	मातृदेवो भव।
30. यह राम का घर है।	इदं रामस्य भवनम् अस्ति।
31. बच्चा पैन को छूता है।	बालः लेखनीं स्पृशति।
32. छात्र निबंध लिखते हैं।	छात्राः निबन्धं लिखन्ति।
33. मैं देव पर क्रोध करता हूँ।	अहं देवाय क्रुध्यामि।
34. उसने जल पिया।	सः जलम् अपिबत्।
35. मैं ऐसा मानता हूँ।	अहम् एवं मन्ये।
36. मैंने गाना सुना।	अहं गीतम् अशृणवम्।
37. उसने नाटक देखा।	सः नाटकम् अपश्यत्।
38. राम वस्तु तौलता है।	रामः वस्तु तोलयति।
39. सिपाही चोर को पीटता है।	राजपुरुषः चौरं ताडयति।
40. मुनि भोजन करते हैं।	मुनयः भोजनं भक्षयन्ति।
41. चोर धन चुराता है।	चौरः धनं चोरयति।
42. आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं।	खगाः आकाशे उत्पतन्ति।
43. मैं प्रातः उठता हूँ।	अहं ब्रह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठामि।
44. फर्श पर लड़की खेलती है।	कन्या कुट्टिमे क्रिडति।
45. यह देव की कुर्सी है।	इयं देवस्य आसन्दिका अस्ति।
46. रमा बाग से आती है।	रमा उद्यानात् आगच्छति।
47. धर्म से सुख होता है।	धर्मात् सुखं भवति।

12 पत्र लेखन
Letter Writing

पत्र दूरस्त व्यक्ति के सामने अपने विचार प्रकट करने का सशक्त माध्यम है। पत्र लेखन में छात्रों को निम्नलिखित नियमों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. भाषा जितनी सरल होगी। पढ़ना उतना ही सार्थक होगा।
2. पत्र में अनावश्यक बातों का उल्लेख नहीं करना चाहिए। इससे पत्र का आकार बढ़ जाता है।
3. व्यक्तिगत पत्र में अभिवादन आवश्यक होता है।
4. पत्र में अपना और पाने वाले का पता स्पष्टतया लिखें।
5. पत्र में दिनांक का उल्लेख अवश्य करें।

विद्यालय में अवकाश हेतु पत्र (Application for leave from school)

सेवायाम्,

प्राचार्यः

सनातन धर्म पाठशाला,

देहरादूनः

श्रीमन्तः!

मम भ्रातुः अश्विनी कुमारस्य विवाह जुलाईमासस्य दशाम्यां तारिकायां निश्चितः जातः। आवश्यक कार्याणि कर्त्तव्यानि मया। अति अहं नवम्यां तारिकायां गृहं गन्तुम इच्छामि।

द्विनद्वयस्य अवकाशः दानीयः इति श्रीमन्तः प्राथ्यन्ते।

भवताम् आज्ञाकारी शिष्य

दिनांक .....

मनोज कुमार

सप्तम श्रेणी

विद्यालय से बीमारी के लिए अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र (Application for sick leave)

सेवायाम्

प्राचार्य,

सनातन धर्म पाठशाला,

आगरा

श्रीमन्तः

अहं दिनद्वयात् ज्वरेण पीडितोऽस्मि। अनेन सार्धम् कासाद्विविकारैः सविशेषं व्यथितोऽहम्। अतः पाठशालां आगन्तुं न शक्नोभि।

श्रीमन्ताः सेवायां निवेदनम् अस्ति। यद् दिनत्रयस्य (जुलाई विंशवितारिकायाः द्वाविंशति पर्यत्तम्) अवकाशः दानीयः।

भवताम् आज्ञाकारी शिष्य

दिनांक .....

अंकुर कुमार

सप्तम श्रेणी

शुल्क मुक्ति हेतु (Application for fee concession)

सेवायाम्

प्राचार्य,

गौड ब्राह्मण पाठशाला,

दिल्ली।

श्रीमन्त:

निवेदनम् अस्ति यद् अहं भवाताम् विद्यालये सप्तम कक्षायां पठामि। मम जनक: एकस्मिन् कार्यालये कार्यम् करोति। मम् परिवारे सप्त जना: सन्ति। तेषां प्रार्थते यद् महमं पूर्णशुल्कमुक्तिं दत्वा अनुगृहम् कुर्वन्तु।

भवताम् आज्ञाकारी शिष्य

दिनांक .....

हरीओम शर्मा

सप्तम श्रेणी

भाई को पत्र (Letter to brother)

अग्रवाल कन्या पाठशाला

कानपुर:

मण्डलम् — कानपुर:

दिनांक — .....

प्रिय: भ्रात:,

नमस्ते।

अद्य अहम पत्र प्राप्ता:। अत्र सर्वम् शोभनम् अस्ति। मम् अध्ययनम् अपि शोभनं वर्तते। अग्रिमें मासे अस्माकं परीक्षा भविष्यति। अत: सर्वा: छात्रा: अध्ययने लग्ना: सन्ति।

परीक्षा: पश्चाद् अहं गृहं आगमिष्यामी। पितृाभ्याम् प्रणाम:।

भवदीया भगिनि

वैशाली रानी

सप्तम श्रेणी

13 निबन्ध-लेखन
Essay Writing

मम विद्यालयः (My School)

अहं राजकीयविद्यालये पठामि। अहं षष्ठ्यां कक्षायां पठामि। मम पाठशाला नायपुर नगरे अस्ति। अयं विद्यालयः नगरे वर्तते। विद्यालस्य परिसरः सुविस्तृतः अस्ति। अस्य भवनं मनोहरम् अस्ति।

श्री हरीशचन्द्रः अस्माकं प्रधानाचार्यः अस्ति। पाठशालायां सप्तदश अध्यापकाः सन्ति। सर्वे अध्यापकाः अस्मान् स्नेहेन पाठयन्ति। वयं अध्यापकानाम् आदरं कुर्मः।

विद्यालये एकं मनोहरम् उपवनम् अस्ति। एकः विशालः पुस्तकालय अस्ति। पुस्तकालये सहस्त्रद्वयं पुस्तकानि सन्ति। नगरे अस्य विद्यालयस्य महती प्रतिष्ठा अस्ति।

संस्कृत भाषा (Sanskrit Language)

संस्कृत भाषा प्राचीन भाषा अस्ति। इयं देववाणी अपि कथ्यते। इयं सरला भाषा अस्ति। अस्य साहित्यं समृद्धम् अस्ति। संस्कृतभाषायाम् अनेके ग्रन्थाः रचिताः सन्ति। संस्कृते चत्वारः वेदाः। षड् शास्त्राणि एकादश उपनिषदः सन्ति।

संस्कृत भाषायाम् अनेके कवयः अभवन्। एषु कालिदासदयः प्रसिद्धाः सन्ति। ते संस्कृतस्य गौरवं वर्धयन्ति। संस्कृते काव्यशास्त्रं, व्याकरणशास्त्रं, अलंकारशास्त्रं च अनेकानि शास्त्राणि सन्ति।

संस्कृतस्य व्याकरणं सर्वांगपूर्णम्। संस्कृतभाषायाः वर्णमाला वैज्ञानिकी अस्ति। अतएव अस्याः प्रचारः देशे विदेशे सर्वत्र अस्ति।

संस्कृतभाषायां भारतीयसंस्कृतिः निहिता। वस्तुतः संस्कृतभाषा श्रेष्ठा भाषा अस्ति।

जन्तुशाला (Zoo)

अहं दिल्ली नगरे वसामि। अत्र अनेकानि दर्शनीयस्थानानि। तेषु जन्तुशाला अत्यधिकं प्रसिद्धा अस्ति। एषा प्रधानमार्गे तिष्ठति। एषा विस्तृता अस्ति।

जन्तुशालायाम् अनेके प्रभागाः सन्ति। एषु प्रभागेषु बहवः पशवः सन्ति। एषु भल्लूकाः सिंहाः मृगाः वानराश्च सन्ति। पक्षिवर्गे शुकाः मयूराः पिकाः सन्ति। ते सर्वे पृथक् पृथक् पञ्जरेषु स्थिताः सन्ति।

अनेके पक्षिणः विदेशात् आनीताः सन्ति।

जलचरवर्गे मत्स्याः मकराः बकाः दर्शकानां हृदयम् आवर्जयन्ति। बकाः जले योगिनः इव ध्यानमग्नाः तिष्ठन्ति। वस्तुतः एषा जन्तुशाला रमणीया अस्ति।

परोपकारः (Noble Deed)

परस्य उपकारः परोपकारः। ये जनाः परेषां हितम् आचरन्ति ते परोपकारिणः सज्जनाः एव परोपकारिणः सन्ति। तेषां जीवनं परोपकाराय भवति। ते परेषां हित साधयन्ति। सज्जनाः परेषां दुःखं न सहन्ते। ते परेषां दुःखस्य निवारणं कुर्वन्ति।

जगति अनेके महापुरुषाः अभवन्। ते परोपकारं कुर्वन्ति स्म। ते परोपकाराय स्वकीयप्राणान् अपि अत्यजन्। भारतवर्षे अपि अनेके परोपकारिणः जनाः जाताः। कर्णः शिबिर्हरिश्चन्द्रादयः अत्र सर्वविशेषम् उल्लेखनीयाः सन्ति। ते परोपकाराय अनेकानि कष्टानि असहन्त।

न केवलं मनुष्याः अपितु जडपदार्थाः अपि परोपकारं कुर्वन्ति। नद्यः परोपकाराय वहन्ति। वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति। मेघाः परोपकाराय वर्षन्ति।